॥ ओ३म् ॥

वैदिक उपासना विधि

परम मित्र मानव निर्माण संस्थान
रोहतक (हरियाणा)

प्रकाशक

परम मित्र मानव निर्माण संस्थान

म.नं. 13, सेक्टर-14, रोहतक (हरियाणा)

दूरभाष: 01262-272133

डॉ. बलवीर आचार्य

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग तथा अध्यक्ष महर्षि दयानन्द शोधपीठ,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

दूरभाष: 9812179379, ईमेल: balviracharya@gmail.com

वेबसाइट : vedichinduwisdom.com

मूल्य : पञ्च महायज्ञों का अनुष्ठान, आत्मा एवं परमात्मा का ध्यान

संशोधित एकादश संस्करण : 27 जनवरी, 2017

सृष्टि संवत् : 1,97,29,49,117

कलि संवत् : 5117

विक्रम संवत् : माघ मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया, 2073

दयानन्दाब्द : 193

समर्पण

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

[यजुर्वेद 36.18]

हम सब एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से
देखें। वेद के इस आदर्श को अपनाकर
सबसे मित्रवत् व्यवहार करने वाले
स्वर्गीय पूज्य पिताश्री चौधरी
मित्रसेन आर्य को सादर
समर्पित।

विनीत पुत्र
कैप्टन रुद्रसेन सिन्धु
अध्यक्ष
परम मित्र मानव निर्माण
संस्थान

संस्थान का उद्देश्य

शिक्षा, संस्कार और सेवा के माध्यम से मानव मात्र के कल्याण के लिए कार्य करना जिससे प्रत्येक मनुष्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के मार्ग पर चलता हुआ सच्चे अर्थों में इस प्रकार का मनुष्य बने जिसकी कल्पना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निम्नलिखित रूप में की है -

मनुष्य की परिभाषा

मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित हों-उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे, अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम से चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।

(महर्षि दयानन्द सरस्वती—स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

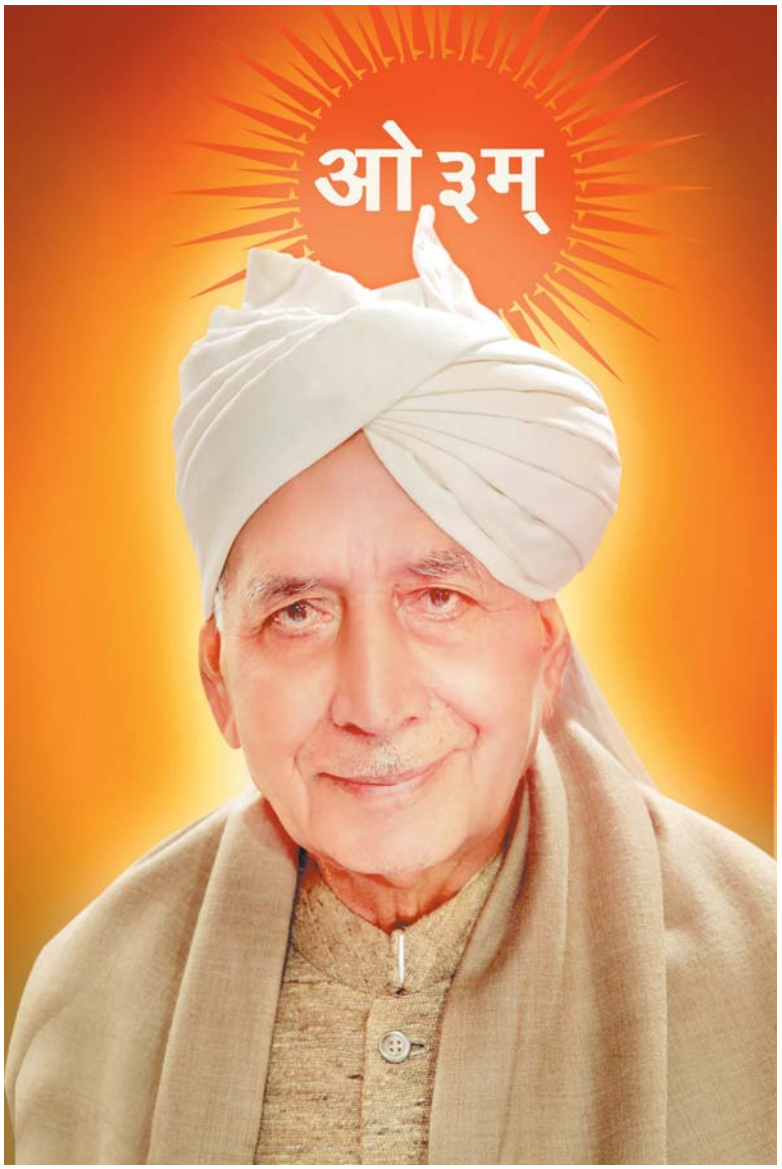

स्व. चौधरी मित्रसेन आर्य

15.12.1931–27.01.2011

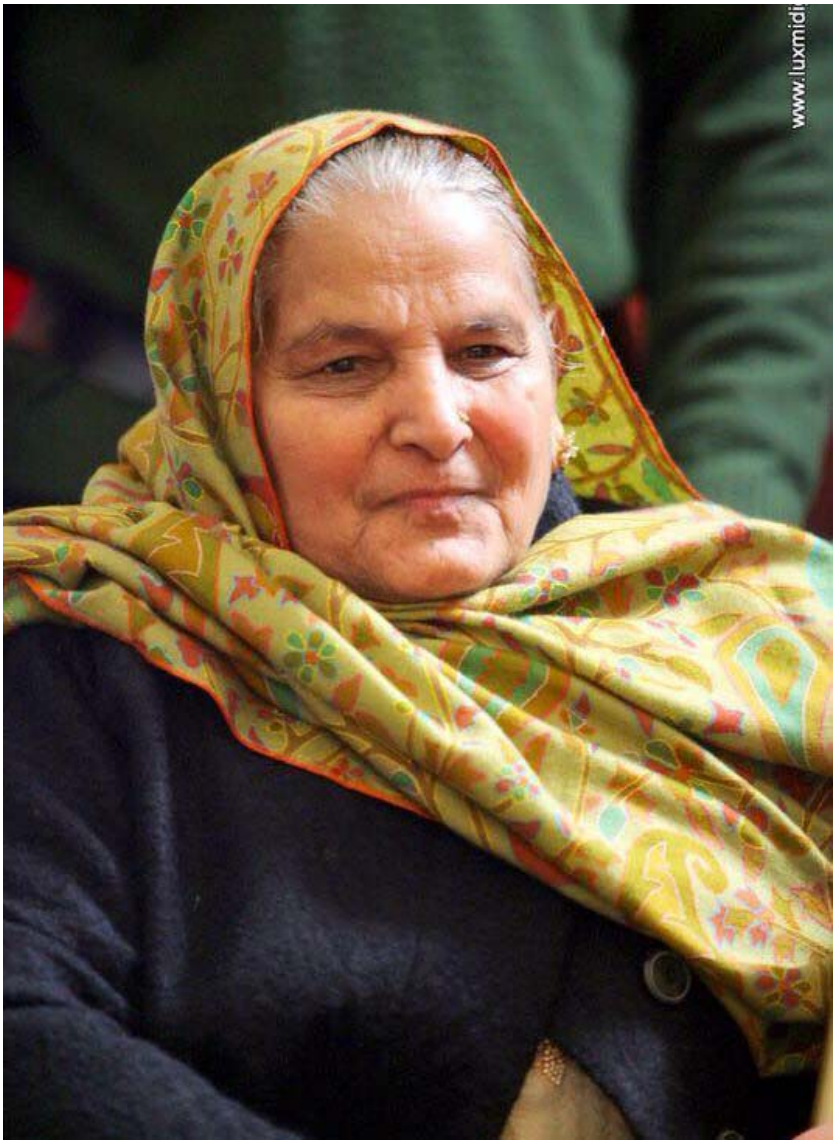

पूज्या माता श्रीमती परमेश्वरी देवी

विषय-सूची

1. प्रस्तावना	9–10
2. एक प्रेरणाप्रद जीवन वृत्त: चौ. मित्रसेन आर्य	11–26
3. प्रात:काल एवं सायंकाल की दिनचर्या	27
4. प्रात:काल की प्रार्थना	28–31
5. शयनकाल की प्रार्थना	31–34
6. स्नान करते समय उच्चारणीय मन्त्र	34–35
7. यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र	35
8. भोजन से पूर्व एवं भोजन के बाद उच्चारणीय मन्त्र	35–36
9. सन्ध्या-उपासना (ब्रह्मयज्ञ) के विषय में विचार	37–38
10. अग्निहोत्र (देवयज्ञ) के विषय में विचार	39
(क)- अग्निहोत्र से पूर्व की तैयारी	40–42
(ख)- ऋत्विक् (पुरोहित) वरण की विधि	42–43
11. सन्ध्या-उपासना (ब्रह्मयज्ञ) मन्त्र एवं व्याख्या	44–58
12. दैनिक अग्निहोत्र विधि	59
(क)- आचमन मंत्र	
(ख)- अङ्गस्पर्श मंत्र	
(ग) - अथ ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना एवं उपासना मन्त्र	61–66
(घ) - अग्न्याधान से पूर्णाहुति पर्यन्त	67–76
(ङ) - पूर्णाहुति के बाद की प्रार्थना-तेजोऽसि....आदि।	76–77
(च) - यज्ञ प्रार्थना - पूजनीय प्रभो --	77
(छ) - संघटन सूक्त	78
(ज) - विश्व कल्याण की प्रार्थना, शान्ति पाठ एवं शान्ति गीत	79
13 बृहद् अग्निहोत्र विधि	80
(क)- आचमन मंत्र	
(ख)- अङ्गस्पर्श मंत्र	
(ग)- अथ ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना एवं उपासना मन्त्र	82–83
(घ)- अथ स्वस्तिवाचनम् एवं भावार्थ	84–93
(ङ)- अथ शान्तिकरणम् एवं भावार्थ	94–102

(च)- अग्न्याधान से पूर्णाहुति पर्यन्त 103-116
14. बलिवैश्वदेव यज्ञ 116-117
15. अमावस्या की आहुतियाँ 118
16. पौर्णमासी की आहुतियाँ 119-120
17. पूर्णाहुति के बाद की प्रार्थना-तेजोऽसि....आदि। 120
18. यज्ञ प्रार्थना----पूजनीय प्रभो!--- 121
19. संघटन सूक्त 121-122
20. विश्व कल्याण की प्रार्थना 122
21. शान्ति पाठ एवं शान्ति गीत 123
22. स्वास्थ्य कामना के लिए आहुतियाँ 123-124
23. जन्म दिवस की विधि 125-126
24. विवाह दिवस विधि 127-129
25. ईश्वर भक्ति के भजन 130-135
26. आशीर्वाद गीत 135
27. युग पुरुष दयानन्द 136
28. वन्देमातरम् गीत एवं भारतीय राष्ट्र गान 137
29. वैदिक राष्ट्रिय गीत 138
30. यजमान को आशीर्वाद, बालक/बालिका को आशिर्वाद 139-140
31. आरती 141
32. जयघोष 142
33. आर्य समाज के नियम 143

प्रस्तावना

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'पञ्च महायज्ञ विधि' नामक पुस्तक में प्रत्येक गृहस्थ के लिए पांच नित्य कर्मों का अर्थात् प्रतिदिन अनिवार्य रूप से करणीय पांच यज्ञों का उल्लेख किया है। 1. ब्रह्म यज्ञ (सन्ध्या उपासना – ईश्वर का चिन्तन, मनन और ध्यान) 2. देवयज्ञ (अग्निहोत्र) 3. पितृयज्ञ (परिवार के वृद्ध स्त्री–पुरुषों की सेवा) 4. बलिवैश्वदेव यज्ञ (निराश्रितों एवं जीव–जन्तुओं को भोजन देना) 5. अतिथि यज्ञ (अतिथियों का सत्कार करना)। शास्त्रकारों ने इन पांच यज्ञों को ही 'महायज्ञ' कहा है। इनमें ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ में मन्त्र उच्चारण पूर्वक यज्ञ कुण्ड में आहुतियां प्रदान की जाती हैं। अत: इनका विधान प्रस्तुत पुस्तक में आगे किया गया है।

पितृ यज्ञ एवं अतिथि यज्ञ की विधि निम्नलिखित है–

पितृयज्ञ

पञ्च महायज्ञों में तीसरा स्थान पितृ यज्ञ का है। जीवित माता, पिता, दादा, दादी आदि परिवार के वृद्ध पुरुष और स्त्रियों व गुरुजनों की श्रद्धापूर्वक सेवा करके उनको सब प्रकार से सुख देना '**पितृयज्ञ**' कहलाता है। पितृयज्ञ के दो भेद हैं–**तर्पण** और **श्राद्ध**। **तर्पण**– उपर्युक्त सभी को सब प्रकार से तृप्त रखना–सुखी रखना '**तर्पण**' कहलाता है। **श्राद्ध** – उपर्युक्त सभी की श्रद्धा पूर्वक सेवा करना – '**श्राद्ध**' कहलाता है। यह '**तर्पण**' और '**श्राद्ध**' जीवित व्यक्तियों का ही किया जा सकता है, मरने के बाद नहीं। क्योंकि जिसने मर कर अपने कर्मों के अनुसार दूसरा जन्म ले लिया, उसकी श्रद्धापूर्वक सेवा और तृप्ति कैसे की जा सकती है ?

अतिथि यज्ञ

अतिथि की सेवा करना पांचवाँ महायज्ञ है। इसको **'नृयज्ञ'** भी कहते हैं। वैदिक चिन्तन के अनुसार श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव युक्त जब कोई धार्मिक विद्वान्, साधु, संन्यासी, सत्योपदेशक आकस्मिक रूप से घर आ जाये उसको अतिथि कहते हैं। इसके साथ-साथ नियत तिथि में अथवा अवसर विशेष पर आने वाले को भी अतिथि कहा गया है। (**अतिथिरभ्यतितो गृहान् भवति। अभ्येति तिथिषु परकुलानिति वा। गृहाणीति वा॥** निरुक्त 4.5) इस प्रकार के अतिथि को देवता कहा गया है- (**अतिथिदेवो भव॥** तैत्तिरीयोपनिषद् 1.11.2) महर्षि मनु के अनुसार अतिथि सत्कार करने से सौभाग्य, यश, दीर्घायु और सुख की प्राप्ति होती है (**धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं वाऽतिथिपूजनम्॥** मनुस्मृति 3.1.6)

यहां यह ध्यान रखें कि घर आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अतिथि नहीं कहलाता और न सभी घर आने वाले सत्कार के योग्य हैं। इस विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि-*''जो पाखण्डी, वेदनिन्दक, नास्तिक-ईश्वर, वेद और धर्म को न माने, अधर्माचरण करने हारे, हिंसक, शठ, मिथ्याभिमानी, कुतर्की और बकवृत्ति अर्थात् पराये पदार्थ हरने वा बहकाने में बगुले के समान अतिथि वेशधारी बनके आवें, उनका वचन मात्र से भी सत्कार गृहस्थ कभी न करें।''*

(संस्कार विधि गृहाश्रम प्रकरण)

नित्य कर्म करने का फल : महर्षि दयानन्द सरस्वती नित्य कर्मों का फल बाते हुए लिखते हैं कि ''इन नित्य कर्मों के फल ये हैं कि-ज्ञान प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से, शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना। उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-ये सिद्ध होते हैं। (पञ्च महायज्ञ विधि)

एक प्रेरणाप्रद जीवन वृत्त

चौ. मित्रसेन जी का जन्म 15 दिसंबर, 1931 ई. को ग्राम खांडाखेड़ी, जिला हिसार (हरियाणा) में हुआ था। आपके पिता चौ. शीशराम आर्य एवं माता श्रीमती जीवन देवी थी। चौ. शीशराम आर्य जी जीविकोपार्जन के लिए परम्परागत व्यवसाय कृषि करते थे। उनका कंठ अत्यन्त मधुर था और गायन कला में वे विशेष प्रवीण थे। इसी कारण उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब कार्यालय लाहौर से जब उनको आर्य समाज का उपदेशक बनाने का प्रस्ताव मिला तो उन्होंने अवैतनिक भजनोपदेशक के रूप में कार्य करना स्वीकार किया।

चौ. मित्रसेन आर्य का जन्म ऐसे निःस्वार्थ, देश-प्रेमी, संस्कारी और तपस्वी पिता के घर में हुआ था। कुल के संस्कारों की पूरी झलक चौ. मित्रसेन जी के व्यक्तित्व में दिखाई पड़ती थी। चौ. साहब की सरलता, सहजता और निष्कपटता का व्यवहार तथा बौद्धिकता से परिपूर्ण वार्तालाप की शैली सभी के मन को मोह लेती थी। आप सरस्वती और लक्ष्मी दोनों के उपासक थे। यदि यह कहा जाए कि चौ. मित्रसेन जी आर्य समाज के भामाशाह थे, तो अतिशयोक्ति न होगी। क्योंकि ऐसा कोई गुरुकुल, कोई आर्य संन्यासी, आर्य विद्वान्, उपदेशक दृष्टिगोचर नहीं होता, जिसका आर्य जी ने आर्थिक सहयोग करके

उत्साहवर्धन न किया हो।

जीवन-संघर्ष : चौ. साहब का संघर्ष और अभावों से परिपूर्ण जीवन सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जब आप 10 वर्ष के थे, तब आपके पिता चौ. शीशराम जी की आँखों की रोशनी काला मोतिया के कारण सदा के लिए चली गई। उसी समय आपके चाचा हरदास जी और बलवंत जी की छत्रछाया परिवार से उठ गई। आपकी दो बुआ भी विधवा हो गई। इसी कारण आपको तीसरी कक्षा की पढ़ाई बीच में छोड़कर पैतृक कार्य कृषि अपनाना पड़ा। आपके बड़े भाई देश की आजादी के लिए क्रान्तिकारियों के साथ लगे रहते थे। इसी कारण परिवार का दायित्व आपके कंधों पर अधिक था। इसी समय 1948 में आपका विवाह परमेश्वरी देवी सुपुत्री श्री अमृत सिंह सहारण गांव जुलानी, जिला जीन्द (हरियाणा) से हुआ।

आपने अपनी दूरदृष्टिपूर्ण सोच से विचार किया कि कृषि कार्य से अपेक्षित आय नहीं हो पायेगी, जिससे परिवार का भरण-पोषण सुगमता से किया जा सके। आपके चाचा श्री चन्दगीराम रोहतक में थानेदार थे। आप उनके पास आ गये। उन्होंने एक वर्कशॉप में 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का कार्य सीखने के लिए भेज दिया। आपके चाचा जी सरल, सादे, ईमानदार और नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित थे तथा आपसे पुत्रवत् स्नेह करते थे। चाचा जी के संस्कारों का प्रभाव भी आपके व्यक्तित्व पर पड़ा। कुछ दिनों के बाद वह कारखाना बंद हो गया तो आपने 1949 में सोनीपत में एटलस साइकिल की फैक्टरी में कार्य किया। सन्

1950 में रोहतक बिजली घर में नौकरी शुरू की। इन संघर्षपूर्ण दिनों में भी निरंतर स्वाध्याय, सत्संग, व्यायाम, प्राणायाम और ईश्वर भक्ति आपकी नियमित दिनचर्या का हिस्सा था। इसी समय आपने हिन्दी सीखी और सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्‌भुत ज्ञान के भंडार, विचारोत्तेजक साहित्य का अध्ययन किया। बिजली घर में काम करते हुए आपने शिल्पकला (इंजीनियरिंग) में विशेषज्ञता प्राप्त की। यहां पर आपने 1950 से 1953 तक साढ़े तीन वर्ष कार्य किया। तदुपरान्त 1954 में आपकी नौकरी उदयपुर में एक कारखाने में लग गई। जहां आपको 150 रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता था।

उद्योग के मार्ग पर : आपने उदयपुर में रहते हुए विचार किया कि अपना ही कारखाना लगाना चाहिए। यह दृढ़संकल्प करके रोहतक वापस आकर 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का कारखाना स्थापित किया। 9 अगस्त, 1957 को हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण आपको गिरफ्तार कर लिया गया और 28 सितंबर, 1957 को रिहाई हुई इसके कारण पहला कारखाना बंद हो गया। कुछ समय बाद आपने 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का दूसरा कारखाना लगाया।

सफल उद्योगपतिः इन दोनों कारखानों में आपको पूर्ण सफलता मिली। इससे उत्साहित होकर आप हरियाणा प्रान्त से बाहर भी उद्योग लगाने का विचार करने लगे। इसके परिणामस्वरूप सन् 1961 में बिहार प्रान्त की सीमा से लगे बड़बिल, उड़ीसा में 'रोहतक इंजीनियरिंग वर्क्स'

के नाम से 'लेथ एण्ड इंजन बोरिंग मशीन' का कारखाना लगाया। युवाओं को शिक्षित करने की पवित्र भावना से बड़बिल कॉलेज की स्थापना की, जिसमें लगभग 20 वर्ष का समय लगा। सन् 1964 में नवाँमण्डी, जिला सिंहभूम (बिहार) में 'हरियाणा इंजीनियरिंग वर्क्स' कारखाना स्थापित किया। स्मरण रहे कि हरियाणा बनने से पहले ही 1964 में चौ. मित्रसेन आर्य ने हरियाणा के नाम पर यूनिट लगाई। सन् 1965 में जोड़ा, जिला क्योंझर (उड़ीसा) में 'सिन्धु इंजीनियरिंग वर्क्स' कारखाना लगाया। सन् 1968 में जनवरी से मार्च तक तीन ट्रक खरीदे, उनसे माइनिंग ट्रांसपोर्टिंग के काम आरम्भ किए।

बाद में इनका विस्तार होता गया। 'उड़ीसा माइनिंग कार्पोरेशन लिमिटेड' (ओ.एम.सी.) और 'टाटा स्टील एण्ड आयरन कं.' अर्थात् टी.आई.एस.सी.ओ. के कॉन्ट्रेक्टर बने, जिसमें माइनिंग, ड्रीलिंग, ब्लास्टिंग, रेजिंग, ग्रेडिंग व क्वालिटी बनाना तथा वाटरिंग एंड ट्रांसपोर्टिंग लोडिंग-अनलोडिंग आदि सारी व्यवस्था का प्रबंध संचालन आपने सफलतापूर्वक किया। 'मित्रसेन एण्ड कम्पनी (रजि.)' के नाम से सन् 1970-75 में सारे उड़ीसा के बिजली बोर्ड के कॉन्ट्रेक्टर रहे तथा ट्रांसपोर्टिंग का कार्य सफलतापूर्वक किया। 1976 में कोयड़ा, जिला सुन्दरगढ़ में भी 'नेशनल इंजीनियरिंग वर्क्स' नाम से कारखाना स्थापित किया, जो आज भी चल रहा है। शिक्षा द्वारा ही समाज में जागरूकता लाई जा सकती है, इस भावना से बनईगढ़, तहसील कोयड़ा में एक स्कूल खुलवाकर लगातार 8 वर्ष तक सभी

कर्मचारियों का वेतन देते रहे। तत्पश्चात् सरकार ने उसका अधिग्रहण कर लिया। सन् 1979 में श्री वीरसेन जी बीए करके बड़बिल (उड़ीसा) पहुंच गए और कार्य सीखने के साथ-साथ पिता जी का सहयोग करने लगे। सन् 1982 में ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी भारतीय सेना से सेवानिवृत्त होकर आ गये तथा 'कालिया पानी क्रोमाइट माइन्स प्रोजेक्ट' को भी संभाल लिया। 1983 में 'बोकारो स्टील थर्मल प्लान्ट' और 'चन्द्रपुरा थर्मल प्लान्ट' का काम शुरू किया। इसके विकसित होते-होते 'कोल ट्रांसपोर्टिंग' का कार्य आरम्भ कर दिया। सन् 1986 में श्री व्रतपाल जी ने चन्द्र पुरा में कैप्टन रुद्रसेन जी के साथ कार्य का शुभारम्भ किया।

कैप्टन रुद्रसेन जी का शुभसंकल्प, कर्मशक्ति और अनुशासन बहुत उन्नत है। इनके छोटे भाई श्री वीरसेन, श्री व्रतपाल, कैप्टन अभिमन्यु, मेजर सत्यपाल, श्री देवसुमन इन उद्योगों की स्थापना तथा विकास में अपने पिताजी के साथ एवं अपने ज्येष्ठ भ्राता कैप्टन रुद्रसेन के आदेशानुसार कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करते रहे।

आपके व्यावसायिक साम्राज्य की यह तो एक झलक मात्र है। इसके अतिरिक्त स्टील प्लांट, थर्मल प्लांट, सीमेंट उद्योग, होटल व्यवसाय, फाइनेंस एवं स्टॉक ब्रोकिंग, कृषि फार्म, मीडिया आदि अनेक ऐसे व्यवसाय हैं, जिनके माध्यम से आपने अनुकरणीय रूप में राष्ट्र की सेवा की। इसी कारण आपकी गणना भारत के सफलतम उद्योगपतियों में की जाती थी। आपके बाद आपके सुयोग्य सुपुत्र आपके

पदचिन्हों पर चलते हुए राष्ट्र विकास के रथ को आगे बढ़ाते हुए अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं।

पत्रकारिता क्षेत्रः पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने रोहतक से 'दैनिक हरिभूमि' समाचार पत्र का सफल प्रकाशन आरंभ कर नया इतिहास रचा। बाद में इस समाचार पत्र का दिल्ली, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश प्रान्तों से भी प्रकाशन शुरू कर देश के शीर्ष दस हिन्दी समाचार पत्रों की श्रेणी में प्रतिष्ठापित किया।

सामाजिक क्षेत्रः मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसी भावना से चौ. साहब सदा सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं से जुड़े रहे। 1949 में आप 18 वर्ष की आयु में रोहतक शहर की झज्जर रोड आर्य समाज व 1951 में गुरुकुल झज्जर के आजीवन सदस्य बने। 1957 में आर्य समाज के नेतृत्व में हिन्दी आर्य सत्याग्रह आंदोलन में आप अन्य सत्याग्रहियों के साथ जेल गए। जून, 1977 में आर्य समाज भुवनेश्वर के वार्षिक उत्सव पर गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) के ब्रह्मचारियों से आपका संपर्क हुआ। आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के परामर्श पर आप 1978 में गुरुकुल आमसेना उड़ीसा के त्यागमूर्ति संन्यासी एवं सञ्चालक स्वामी धर्मानन्द जी के सम्पर्क में आये और गुरुकुल के सञ्चालन में तन, मन एवं धन से अनुकरणीय सहयोग करते रहे। फलस्वरूप कृतज्ञ गुरुकुल समिति ने आपको गुरुकुल की प्रबन्धकर्त्री सभा का आजीवन प्रधान बना दिया।

आपने इस गुरुकुल को आत्मनिर्भर बना दिया। इसके

अतिरिक्त अन्य गुरुकुलों, गोशालाओं, कन्या गुरुकुलों, आर्यसमाजों, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व हरियाणा, परोपकारिणी सभा अजमेर (राजस्थान), आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा, सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, वैदिक विद्वज्जनों, संन्यासियों, गरीबों आदि के लिए आर्थिक सहयोग करने में सदैव तत्पर रहते थे। आपने 'परम मित्र मानव निर्माण संस्थान' की स्थापना भी जनसेवा हितार्थ ही की थी।

उदारवादिता: चौ. मित्रसेन जी के जीवन में सत्य, संयम और सेवा का अद्‌भुत सम्मिश्रण था। उनके जीवन का लक्ष्य स्पष्ट था, जीवन की पद्धति तय थी और जीवन का कार्य प्रवाहमान् था। उनके सद्‌गुणों ने उन्हें अपने निर्धारित लक्ष्य से कभी भटकने नहीं दिया। आपने समाज के हर उस कार्य में येन-केन-प्रकारेण सहयोग दिया, जिसमें मानव हित निहित हो। आपकी सोच का मूल मंत्र था कि जो सबके लिए हितकारी हो और खुद के लिए भी सुख देने वाला हो, उसी का सदा आचरण करना चाहिए, क्योंकि वही सर्वार्थ सिद्धि का मूल है।

आपकी उदारवादिता से कितने ही गुरुकुल, शिक्षण संस्थान, न्यास, प्रतिनिधि सभाएं, गोशालाएं, संस्थाएं, आर्य समाज, धर्मशालाएं, योग के प्राकृतिक चिकित्सालय, कन्या छात्रावास, अनाथालय, दिन-रात समाज की सेवा कर रहे हैं। आपका वरदहस्त निर्धनों, ब्रह्मचारियों, संन्यासियों, शहीदों के परिवारों, असहाय कन्याओं, भूकंप ग्रस्तों के पुनर्वास हेतु निरन्तर दानभाव से आर्द्र रहता था।

कारगिल युद्ध के समय मोर्चे पर जो भारतीय सैनिक वीरतापूर्वक लड़े और दुश्मनों के छक्के छुड़ाते हुए जिन्होंने अपने प्राण देश पर न्यौछावर कर दिए, उनमें हरियाणा के भी अनेक रणबांकुरे शामिल थे। आपने इन शहीदों के परिवारों को एक-एक लाख रुपये की मदद दी। राष्ट्र की पुकार और प्रधानमंत्री की अपील पर चौ. मित्रसेन जी ने बहुत बड़ी राशि रक्षा कोष में देकर अपने कर्तव्य का तो पालन किया ही, साथ ही धन का सदुपयोग भी किया। इससे पूर्व भारत-पाक युद्ध में आपने रक्षा कोष में इसी तरह महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया था। यही नहीं, राष्ट्र में प्राकृतिक आपदा, महामारी और अकाल के समय लोगों की आर्थिक सहायता करने में आप कभी पीछे नहीं रहे। जब महाराष्ट्र के लातूर में विनाशकारी भूकंप आया तब आपने तन, मन और धन से जुटकर उन लोगों को संभालने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। कच्छ और भुज (गुजरात) में इतना भयंकर विनाशकारी भूकंप आया था कि नगर के नगर धराशाही हो गए थे। तब आपने मानवता की रक्षा के लिए उदारतापूर्वक धन और अन्य सामग्री का दान किया।

कच्छ और भुज में आपके सभी सुपुत्र आपके कन्धे से कन्धा मिलाकर दिन-रात राहत कार्यों में लगे रहे। वहां के भूकंप पीड़ितों के पुनर्वास के लिए आपने डॉ. साहिब सिंह वर्मा के साथ दो गांवों को गोद लिया, जिनमें दिल खोलकर उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग किया। गुजरात के सबसे पहले पुनर्वासित गांव इन्द्रप्रस्थ में लगभग 800 परिवार आबाद किए गए। चौ. मित्रसेन जी का परिवार

नियमित रूप से वहां जाकर लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करता था। दलितों, पतितों, दीन-दु:खियों के रक्षक मित्रसेन आर्य के पास यदि कोई निर्धन व्यक्ति आया तो आपने उसकी सहायता की। क्योंझर (उड़ीसा) के एक स्कूल में जब अध्यापकों का वेतन एक-दो वर्ष तक न दे पाने की नौबत आई तो आपने तीन-चार अध्यापकों का दो वर्ष तक वेतन स्वयं दिया। आर्य समाज और उसकी शिक्षण संस्थाओं में, गुरुकुलों में और यज्ञशालाओं के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने में आप कभी पीछे नहीं रहे। आपने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के परिसर में महर्षि दयानन्द की प्रतिमा और यज्ञशाला का निर्माण कराने में अहम् भूमिका निभाई।

शैक्षणिक क्षेत्र: चौ. मित्रसेन जी की सदैव कोशिश रहती थी कि विद्या का प्रचार-प्रसार हो। इसके लिए आपने हर संभव प्रयास किए। आपने सिन्धु एजुकेशन फाउंडेशन नामक ट्रस्ट बनाया, जिसके अंतर्गत अनेक इंडस स्कूल, डिग्री कॉलेज, इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट संस्थान, डी.एड. व बी.एड कॉलेज व नर्सिंग कॉलेज चल रहे हैं। समाज में नारी शिक्षा के प्रसार में आपका विशेष योगदान रहा है। आपके आर्थिक सहयोग से अनेकानेक संस्थाएं फलीभूत हो रही हैं।

वैदिक साहित्य के प्रति आस्था: आपका यह दृढ़ विश्वास था कि संसार का कल्याण वेद के ज्ञान से ही हो सकता है। अत: आप वैदिक विद्वानों का न केवल सम्मान करते थे अपितु उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों का प्रकाशन कराकर

समाज कल्याण के लिए वास्तविक ज्ञान का प्रचार करने में सदैव उद्यत रहते थे। आपने अपने जीवन काल में लगभग 50 ग्रन्थों एवं पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कराया। इस गरिमामयी परम्परा का निर्वाह आज भी आपके सुपुत्रों द्वारा श्रद्धा भावना से किया जा रहा है।

कृषि क्षेत्रः आपने कृषि व बागवानी के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये। कृषि, बागवानी व पशुपालन में निवेश कर उत्पादन लेना आपको विशेष प्रसन्नता प्रदान करता था। आपकी ही प्रेरणा एवं परिश्रम से रोहतक के गांव माडौदी जैसे बहुत-से बंजरस्थल शस्य श्यामला होकर लहलहा रहे हैं। उन पर आंवला, नींबू, बेर, अमरूद, संतरा, कीनू आदि के वृक्ष सबके मन को मोह लेते हैं।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से वार्ता प्रसारणः आपकी समय-समय पर आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से सामाजिक, कृषि संबंधी तथा समसामयिक विषयों पर अनेक वार्ताएं प्रसारित हुई, जिनका लाभ दूरदराज के क्षेत्रों में बैठे लोग पूर्णतया उठाते रहे। पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए आपके उत्कृष्ट साक्षात्कार प्रेरणादायक होते थे।

संतों का सान्निध्यः आर्य जगत् के नेता मूर्धन्य संन्यासी स्वामी समर्पणानन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द, आनन्द स्वामी, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यपति, आचार्य बलदेव जी, स्वामी व्रतानन्द, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी रामदेव जी, स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश

जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, जैसे तपोनिष्ठ संतों के सान्निध्य ने आप जैसे सात्विक व्रत के व्यक्ति को और अधिक गरिमामय बना दिया था।

प्रसिद्ध वैदिकधर्मी एवं राष्ट्रभक्त: आपका परिवार पूर्वजों के समय से ही आर्य समाज के सिद्धांतों से दीक्षित रहा है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है–आपके पूज्य पिता चौ. शीशराम जी आर्य, प्रतिनिधि सभा लाहौर (पंजाब) में अवैतनिक वैदिक धर्म प्रचारक थे। आपके परिवार के बुजुर्ग जैलदार चौधरी राजमल जी, प्रधान सातरौल खाप, क्रांतिकारी सरदार शहीद भगत सिंह, लाला लाजपत राय, पंडित लखपतराय, चंदूलाल तायल, डॉक्टर रामजीलाल, बाबू चूड़ामणी, डॉक्टर धनीराम, भाई परमानन्द आदि आर्य महापुरुषों के मित्र थे। इस प्रकार आपके पूर्वजों ने सामाजिक उत्थान एवं देश के स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया। देशभक्ति का यह परम्परागत संस्कार आपके व्यक्तित्व में समाया हुआ था। समस्त भारत आपको कर्तव्यनिष्ठ, राष्ट्रभक्त, वैदिकधर्मी के रूप में पाकर गौरव अनुभव करता था।

सच्चे मित्र यथा नाम तथा गुण : यथा नाम तथा गुणानुसार आप आदर्श मित्रभाव के धनी थे। यजुर्वेद 36.18 का यह संदेश **'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'** हम सब एक–दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। आपके जीवन का आदर्श था। अपने मित्रों के प्रति आप कितने समर्पित थे, इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है। आपके एक उड़ीसा के सखा आदित्य

कुमार महापात्रा बिड़ला कंपनी में गैस इंचार्ज के रूप में कार्य करते थे। महापात्रा भी व्यवहार से शुद्ध पवित्र आत्मा थे। लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद महापात्रा जी को दस बेटियों की शिक्षा-दीक्षा का खर्च उठाने में अति कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। यह सब आपसे देखा नहीं गया और एक मित्र के सहयोग की भावना से आपने 1976 में एक ट्रक नंबर 1918-ओ.आर.जे. खरीद कर महापात्रा के दरवाजे पर खड़ा कर दिया कि इससे महापात्रा के परिवार का खर्च चलाने में सहायता मिलेगी। महापात्रा ने ट्रक लेने से इनकार कर दिया। कुछ समय बाद महापात्रा का स्वर्गवास हो गया। तब उनके परिवार का भरण-पोषण करने की भावना से आपने अपने ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन रुद्रसेन जी को आदेश दिया कि इस परिवार को प्रतिमाह पांच हजार रुपये का सहयोग दिया जाए। यह सहयोग आज भी वर्षों से जारी है। इसके अतिरिक्त आपकी उदारता से पुत्रियों के शादी विवाह के समय भी आवश्यकतानुसार सहयोग दिया जाता रहा।

सद्गृहस्थः आपका गृहस्थ आश्रम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत था और आज भी है। जहां सभी सदस्य धार्मिक, ईश्वर उपासक, गुणानुरागी, राष्ट्रभक्त और पंच महायज्ञों के अनुष्ठाता हैं। इस घर में लक्ष्मी और सरस्वती का निवास है। आश्रम तुल्य आपके घर की चारदिवारी पर अंकित सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक के गौरवमयी आर्यावर्त के इतिहास की झलकियाँ रोमांचक हर्षातिरेक का अनुभव कराती हैं। सुगंधित पुष्पों से सुवासित प्रांगण

में शोभायमान भव्य यज्ञशाला में संधिवेला में आपके पुत्र, पौत्रों और पुत्रवधुओं द्वारा गुंजायमान् वैदिक मंत्रों की ध्वनि, महकती हुई यज्ञीय सुगंध, ऋषि–महर्षियों के आश्रम जैसी अनुभूति कराती है। वस्तुतः आपका यह सिन्धु भवन आर्यों का तीर्थस्थल बन गया है। चौधरी साहब के देवतुल्य परिवार में, आपके सुख–दु:खों की सहभागिनी पूज्या माता श्रीमती परमेश्वरी देवी की विनम्रता, उदारता, निर्भीकता, क्रान्तदर्शिता, बौद्धिक प्रखरता, शुचिता और धर्मपरायणता सिन्धु कुल की गरिमा और आदर्श का केन्द्र बिन्दु है। इस प्रकार के स्पृहणीय सिन्धु कुल की वंशावली इस प्रकार है–

चौधरी मित्रसेन सिन्धु वंशावली

पिताजी चौधरी शीशराम एवं माताजी श्रीमती जियो देवी

↓

चौधरी मित्रसेन सिन्धु एवं धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी

पुत्र

कै. रुद्रसेन श्रीमती सरोज	श्री वीरसेन श्रीमती शशि	श्री व्रतपाल श्रीमती ऊषा	कै. अभिमन्यु श्रीमती एकता	मेजर सत्यपाल श्रीमती अनिका	श्री देवसुमन श्रीमती रचना
सुमति-विनीत महरिया सुयशा एवं सुरीन सुरभि-अमन गहलोत अभिराज शाहिस्ता-अर्जुन गहलोत आर्षराज सर्वेश	सौरभ-सोनल सर्वमित्र श्वेता सोमवीर	स्मृति-विराट चौहान सुमेधा सृजना स्तव्य	श्रेया सात्विक शाश्वत	शौर्य सुरुचि	स्वस्ति साहिबा

पुत्रियां

श्रीमती दया देवी चौ.राजबीर	श्रीमती बिमला श्री कुलबीर सिंह	श्रीमती मधु श्री शमशेर सिंह

सम्मानित सदस्य

आप निम्नलिखित आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सदस्य थे:

■ आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अंतरंग सभा के लगभग 27 वर्ष तक सदस्य रहे।

■ परोपकारिणी सभा, अजमेर के ट्रस्टी एवं उपप्रधान रहे।

■ सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नौलखा महल, उदयपुर के सदस्य रहे।

■ आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के संरक्षक रहे।

■ प्राच्याविद्यानुसन्धानम्–अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका के आजीवन संरक्षक रहे।

■ अनेक आर्यसमाजों व प्रादेशिक सभाओं के वरिष्ठ पदाधिकारी रहे।

■ अनेक गुरुकुलों एवं शिक्षण संस्थाओं के संस्थापक एवं संचालक रहे।

■ दयानन्द मठ प्रबंधकारिणी सभा रोहतक के प्रधान रहे।

पुरस्कार एवं अभिनन्दन: 23 दिसंबर, 2003 को भारत सरकार द्वारा किसान दिवस पर 'कृषि विशारद' की उपाधि से सम्मानित किए गए।

हरियाणा सरकार द्वारा 2002–03 के चौधरी देवीलाल जिला स्तरीय किसान पुरस्कार से सम्मानित किए गए।

जीवन का लक्ष्य:

'**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः**' अर्थात् कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो। '**मित्रस्य**

चक्षुषा समीक्षामहे' अर्थात् हम सब एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। वेद के इन दो आदर्शों को जीवन का लक्ष्य बनाकर आप अपने अदम्य उत्साह, साहस और पुरुषार्थ से देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास में आजीवन योगदान करते रहे।

महाप्रयाणः महाराजा भर्तृहरि की प्रसिद्ध उक्ति है-

'परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्'।।

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है, लेकिन जन्म लेना उसी का सार्थक है जो अपने कार्यों से कुल, समाज और राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करता है। चौ. मित्रसेन जी आर्य इस उक्ति को अक्षरशः चरितार्थ करते हुए 27 जनवरी, 2011 को प्रातः 1.15 बजे इस भौतिक शरीर को त्याग कर ईश्वर के विधान के अनुसार महाप्रयाण कर गये। ■■■

प्रातःकाल की दिनचर्या

1. प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में (सूर्योदय से दो घंटे पूर्व) उठकर ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना करें।
2. शौच, दन्त धावन
3. भ्रमण, व्यायाम
4. स्नान
5. ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या-उपासना एवं स्वाध्याय)
6. अग्निहोत्र
7. पितृयज्ञ
8. बलिवैश्वदेव यज्ञ
9. अतिथि यज्ञ
10. भोजन तथा अन्य कार्य

सायंकाल की दिनचर्या

1. अग्निहोत्र
2. ब्रह्मयज्ञ
3. पितृयज्ञ
4. बलिवैश्वदेव यज्ञ
5. अतिथि यज्ञ
6. भोजन, दन्त धावन
7. भ्रमण
8. 'शिव संकल्प' मन्त्रों का अर्थ सहित चिन्तन करते हुए लगभग दस बजे शयन

प्रातःकाल की प्रार्थना

ओ३म्। प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे
प्रातर् मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर् भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं
प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम॥ 1॥

अर्थ— हम प्रतिदिन (**प्रातः**) प्रभात वेला में (**अग्निम्**) स्वप्रकाशस्वरूप (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य युक्त (**मित्रवरुणा**) सर्वशक्तिमान् (**अश्विना**) उस परमात्मा की (**हवामहे**) स्तुति करते हैं और (**प्रातः**) प्रभात वेला में (**भगम्**) भजनीय=सेवनीय, ऐश्वर्य युक्त (**पूषणम्**) पुष्टिकर्ता (**ब्रह्मणस्पतिम्**) उपासनीय, वेद और ब्रह्माण्ड के पालन करने हारे (**सोमम्**) अन्तर्यामी प्रेरक (**उत**) और (**रुद्रम्**) पापियों को रुलाने हारे और सर्वरोगनाशक जगदीश्वर की (**हुवेम**) स्तुति-प्रार्थना करते हैं।

ओ३म्। प्रातर् जितं भगमुग्रं हुवेम वयं
पुत्रमदितेर् यो विधर्ता।
आध्रश्चिद् यं मन्यमानस् तुरश्चिद् राजा
चिद् यं भगं भक्षीत्याह॥ 2॥

अर्थ —(**प्रातः**) ब्रह्म मुहूर्त में (**जितम्**) जयशील (**भगम्**) ऐश्वर्य के दाता (**उग्रम्**) तेजस्वी (**अदितेः**) समस्त ब्रह्माण्ड के (**पुत्रम्**) रक्षक और (**यः**) जो (**विधर्ता**) उसको विविध प्रकार से धारण करने वाला है उसकी (**वयम्**) हम (**हुवेम**) स्तुति करते हैं। (**यम् चित्**) जिसको (**आध्रः**) सब ओर से धारणकर्त्ता

(**मन्यमानः**) जानने हारा (**तुरश्चित्**) दुष्टों को दण्ड देने हारा और (**राजा**) प्रकाश स्वरूप सबका स्वामी जानते हैं और (**यम् चित्**) जिस (**भगम्**) भजनीय = सेवनीय, ऐश्वर्ययुक्त ईश्वर का (**भक्षीति**) इस प्रकार मैं सेवन करता हूँ, स्तुति करता हूँ, उसी का (**आह**) उपदेश करता हूँ।

ओ३म्। भग प्रणेतर् भग सत्यराधो
भगेमां धियमुदवा ददन् नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्
भग प्र नृभिर् नृवन्तः स्याम॥ 3॥

अर्थ —हे (**भग**) भजनीय=सेवनीय, ऐश्वर्ययुक्त प्रभो! (**प्रणेतः**) आप सबके उत्पादक, सत्याचार में प्रेरक एवं (**सत्यराधः**) सत्य धन = मोक्ष रूप ऐश्वर्य को देने हारे हो। आप (**नः**) हमारे (**इमाम् धियम्**) इस बुद्धि को (**ददत्**) दीजिए और उस बुद्धि के दान से हमारी (**उदव**) रक्षा कीजिए। हे (**भग**) ऐश्वर्ययुक्त प्रभो! (**नः**) हमारे लिए (**गोभिः**) गाय आदि और (**अश्वैः**) घोड़े आदि उत्तम पशुओं के योग से राज्यश्री को (**प्रजनय**) प्रकट कीजिए। (**भग**) हे भजनीय = सेवनीय प्रभो! आपकी कृपा से हम लोग (**नृभिः**) उत्तम मनुष्यों से तथा (**नृवन्तः**) श्रेष्ठ वीर पुरुषों वाले (**प्रस्याम**) होवें।

ओ३म्। उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत
प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं
देवानां सुमतौ स्याम॥ 4॥

अर्थ—हे भगवन्! आपकी कृपा और अपने पुरुषार्थ से हम लोग (**इदानीम्**) इस प्रभात वेला में (**उत**) और (**अह्नाम्**) दिनों के (**प्रपित्वे**) उदयकाल में (**मध्ये**) मध्य काल में (**भगवन्तः**) सभी प्रकार के धन-ऐश्वर्यों से सम्पन्न एवं शक्तिमान् (**स्याम**) होवें। (**उत**) और (**मघवन्**) हे ऐश्वर्यों की वर्षा करने हारे प्रभो! (**सूर्यस्य उदिता**) सूर्य के उदयकाल में (**वयम्**) हम लोग (**देवानाम्**) पूर्ण विद्वान्, धार्मिक, आप्त लोगों की (**सुमतौ**) कल्याणकारी बुद्धि में अर्थात् उनके विचार को मानने वाले (**स्याम**) होवें।

ओ३म्। भग एव भगवाँ अस्तु
देवास् तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति
स नो भग पुरएता भवेह॥ 5॥

ऋग्वेद मण्डल 7, सूक्त 41, मन्त्र 1-5

अर्थ—हे (**भग**) सकल ऐश्वर्य सम्पन्न जगदीश्वर! जिससे (**तम् त्वा**) उस आपकी (**सर्वः**) सब सज्जन (**इज्जोहवीति**) निश्चय करके प्रशंसा करते हैं। (**सः**) वे आप ही (**भग**) ऐश्वर्य प्रदान करने वाले (**इह**) इस संसार में तथा (**नः**) हमारे गृहस्थाश्रम में (**पुर एता**) अग्रगामी और हमें आगे-आगे सत्यकर्मों में बढ़ाने हारे (**भव**) होइये। हे प्रभो! (**भग एव**) सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त और समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से आप ही हमारे (**भगवान्**) पूजनीय देव (**अस्तु**) हो जाइये। (**तेन**) आपके कारण अर्थात् आपकी प्रार्थना और उपासना से

(देवा वयम्) हम विद्वान् लोग **(भगवन्तः)** सकल ऐश्वर्य सम्पन्न होके सब संसार के उपकार में तन, मन और धन से प्रवृत्त **(स्याम)** होवें।

शयनकाल की प्रार्थना

ओ३म्। यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ 1॥

अर्थ—हे प्रभो! **(यत्)** जो **(दैवम्)** दिव्य गुणों वाला मेरा मन **(जाग्रतः)** जागते हुए **(दूरम्)** दूर **(उदैति)** चला जाता है। **(तत् उ)** वही मेरा मन **(सुप्तस्य)** सोये हुए का भी **(तथैव)** उसी प्रकार दूर **(एति)** चला जाता है। **(दूरङ्गमम्)** दूर तक जाने वाला यह मन **(ज्योतिषाम् ज्योतिः)** ज्ञान का प्रकाश कराने वाली इन्द्रियों का भी प्रकाशक है और **(एकम्)** यह एक ही है। **(तत्)** वह **(मे)** मेरा **(मनः)** मन **(शिव)** शुभ, कल्याणकारी **(संकल्पम्)** विचारों वाला **(अस्तु)** होवे।

ओ३म्। येन कर्माण्यपसो मनीषिणो
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ 2॥

अर्थ— हे प्रभो! **(येन)** जिस मन के द्वारा **(धीराः)** धैर्यशाली **(अपसः)** कर्मशील और **(मनीषिणः)** मनस्वी लोग **(यज्ञे)** अग्निहोत्र आदि यज्ञों में अथवा योगाभ्यास

में तथा (**विदथेषु**) ज्ञान-विज्ञान एवं युद्धादि व्यवहारों में (**कर्माणि**) कर्मों को (**कृण्वन्ति**) करते हैं। (**यत्**) जो मन (**अपूर्वम्**) आश्चर्यजनक शक्ति से युक्त और (यक्षम्) पूजनीय है, जो (**प्रजानाम् अन्तः**) प्राणियों के अन्दर रहता है। (**तत्**) वह (**मे**) मेरा (**मनः**) मन (**शिव**) शुभ, कल्याणकारी (**संकल्पम्**) विचारों वाला (**अस्तु**) होवे।

ओ३म्। यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ 3॥

अर्थ— हे प्रभो! (**यत्**) जो मन (**प्रज्ञानम्**) उत्तम ज्ञान का साधक है (**उत**) और (**चेतः**) स्मृति का साधक है। (**च**) लज्जा आदि कर्मों को करने वाला है। (**धृतिः**) धैर्य रूप है और जो (**प्रजासु**) मनुष्यों के (**अन्तः**) अन्दर (**अमृतम्**) नाश रहित (**ज्योतिः**) ज्योति है; (**यस्मात् ऋते**) जिसके बिना (**किञ्चन**) कोई भी (**कर्म**) कर्म (**न क्रियते**) नहीं किया जाता। (**तत्**) वह (**मे**) मेरा (**मनः**) मन (**शिव**) शुभ, कल्याणकारी (**संकल्पम्**) विचारों वाला (**अस्तु**) होवे।

ओ३म्। येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्
परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस् तायते सप्तहोता
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ 4॥

अर्थ— हे प्रभो! (**येन**) जिस (**अमृतेन**) नाश रहित, परमात्मा के साथ संयुक्त मन से (**भूतम् भुवनम् भविष्यत्**) भूत, वर्तमान और भविष्यत् काल में होने वाला (**इदम् सर्वम्**) यह सब व्यवहार (**परिगृहीतम्**) सब ओर से गृहीत=ज्ञात होता है; (**येन**) जिसके द्वारा (**सप्त होता**) सात होताओं द्वारा सम्पन्न किया जाने वाला (**यज्ञः**) अग्निष्टोम आदि यज्ञ अथवा पांच ज्ञानेन्द्रियों, बुद्धि और आत्मा रूपी सात होताओं के साथ मिलकर शुभ कर्म रूपी यज्ञ (**तायते**) सम्पन्न किया जाता है। (**तत्**) वह (**मे**) मेरा (**मनः**) मन (**शिव**) शुभ, कल्याणकारी (**संकल्पम्**) विचारों वाला (**अस्तु**) होवे।

ओ३म्। यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि
यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ 5॥

अर्थ— हे प्रभो! (**यस्मिन्**) जिस मन में (**रथ नाभौ इव**) जैसे रथचक्र के मध्य धुरा में आरे लगे होते हैं, वैसे ही (**ऋचः साम यजूꣳषि**) ऋक्, साम, यजुष् इन तीन प्रकार के मन्त्रों से युक्त ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद-ये चारों वेद (**प्रतिष्ठिताः**) प्रतिष्ठित हैं- संयुक्त हैं; (**यस्मिन्**) जिस मन में (**प्रजानाम्**) प्रजाओं का (**सर्वम्**) सब (चित्तम्) पदार्थ विषयक ज्ञान (**ओतम्**) ओत-प्रोत है, समाया हुआ है। (**तत्**) वह (**मे**) मेरा (**मनः**) मन (**शिव**) शुभ, कल्याणकारी (**संकल्पम्**) विचारों वाला (**अस्तु**) होवे।

ओ३म्। सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्
नेनीयतेऽभीशुभिर् वाजिन ऽ इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ 6॥

(यजुर्वेद 34.1-6)

अर्थ— हे प्रभो! (**यत्**) जो मन (**सुषारथिः**) अच्छे प्रकार रथ चलाने वाला-सारथि जैसे (**अभीशुभिः**) लगाम की रस्सियों से (**वाजिन अश्वान् इव**) सुशिक्षित अश्वों को इच्छानुसार चलाता है उसी प्रकार यह मन (**मनुष्यान्**) मनुष्यों को (**नेनीयते**) बार-बार इधर-उधर ले जाता है, (**यत्**) जो मन (**हृत्प्रतिष्ठम्**) हृदय में स्थित है, (**अजिरम्**) वृद्धावस्था से रहित और (**जविष्ठम्**) अत्यन्त वेगवान् है। (**तत्**) वह (**मे**) मेरा (**मनः**) मन (**शिव**) शुभ, कल्याणकारी (**संकल्पम्**) विचारों वाला (**अस्तु**) होवे।

स्नान करते समय उच्चारणीय मन्त्र

ओ३म्। आपो हि ष्ठा मयोभुवस् ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ 1॥ अथर्ववेद 1.5.1

ओ३म्। यो वः शिवतमो रसस् तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ 2॥ अथर्ववेद 1.5.2

ओ३म्। अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्व शं भुवम्॥ 3॥

अथर्ववेद 1.6.2

1. ये जल सुख प्रदान करने वाले, बल-उत्साह

प्रदान करने वाले और अत्यन्त रमणीय रूप को देने वाले हैं।

2. जैसे मां बच्चों का कल्याण करती है उसी प्रकार जलों के कल्याणकारी रस को हम प्राप्त करें।

3. परमेश्वर ने वेद मन्त्रों के माध्यम से यह बताया है कि जलों के अन्दर रोग निवारक एवं आरोग्य दायक शक्ति है तथा विश्व का कल्याण करने वाली अग्नि विद्यमान है।

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

ओ३म्। यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर् यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥ —पारस्कर गृह्य सूत्र 2.2.11

भावार्थ— यह यज्ञोपवीत अत्यन्त पवित्र और आयु को बढ़ाने वाला है। यह पहले से ही प्रजापति के साथ उत्पन्न हुआ है अर्थात् आदिकाल से ही वैदिक कृत्यों में प्रचलित है। यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों के आचरण के निमित्त इस यज्ञोपवीत को मैं धारण कर रहा हूँ। यह मुझे दीर्घायु, उज्ज्वल चरित्र, बल और तेज प्रदान करे।

भोजन से पूर्व उच्चारणीय मन्त्र

ओ३म्। अन्न॑प॒तेऽन्न॑स्य नो देह्यनमी॒वस्य॑ शु॒ष्मिण॑ः। प्रप्र॑ दा॒तार॑ं तारिष॒ऽऊर्ज॑ं नो धेहि द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे॥ —यजुर्वेद 11.83

भावार्थ—हे अन्न के स्वामी प्रभो! आप हमें पुष्टिकारक एवं रोगनाशक अन्न प्रदान करो। अन्न का दान करने वालों को समृद्ध बनाओ। आप हमारे कुटुम्बियों और पशुओं को ओज प्रदान करो।

भोजन के बाद उच्चारणीय मन्त्र

ओ३म्। मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य । नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥ ६ ॥

ऋग्वेद 10.117.6

भावार्थ—जो स्वार्थी व्यक्ति अन्न आदि भोग्य पदार्थों को केवल अपने लिए ही प्राप्त करता है, उनसे न तो ईश्वर की उपासना यज्ञ आदि करता है, न विद्वानों की सेवा करता है और न ही बन्धु-बान्धवों को तृप्त करता है; उसका अन्न आदि प्राप्त करना निष्फल है। यह बात बिल्कुल सत्य है। क्योंकि वह उसके नाश का कारण बनेगा। **(केवल+आदी)** केवल स्वयं ही खाने वाला **(केवल+अघः)** केवल पाप रूप **(भवति)** होता है।

◆◆◆

सन्ध्या-उपासना (ब्रह्मयज्ञ) के विषय में विचार

ऋषयो दीर्घसन्ध्यत्वाद् दीर्घमायुरवाप्नुयुः।
प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च॥

मनुस्मृति 4.94

ऋषियों ने दीर्घ सन्ध्या करके, दीर्घ आयु, बुद्धि, यश, कीर्ति और ब्रह्मतेज प्राप्त किया।

ब्रह्मयज्ञ—सन्ध्या, उपासना और स्वाध्याय को 'ब्रह्मयज्ञ' कहा जाता है।

सन्ध्या—सम् = अच्छे प्रकार। ध्या = चिन्तन, मनन और ध्यान करना। अर्थात् जिस क्रिया के द्वारा ईश्वर का अच्छे प्रकार चिन्तन, मनन और ध्यान किया जाये, उसे 'सन्ध्या' कहते हैं।

उपासना—ईश्वर का ध्यान करते हुए उसके आनन्द स्वरूप में आत्मा को मग्न करना 'उपासना' है।

स्वाध्याय—स्वस्य = अपने आपका, अध्ययनम् = अध्ययन करना। अथवा स्वयम् = अपने आप, अध्ययनम् = अध्ययन करना 'स्वाध्याय' है। इस प्रकार आत्मा और परमात्मा का चिन्तन, मनन और ध्यान तथा वेद, वेदाङ्ग, उपनिषद्, गीता, रामायण, दर्शन आदि ग्रन्थों का अध्ययन 'स्वाध्याय' कहलाता है।

सन्ध्या-उपासना करने का लाभ—दैनिक व्यवहार

में अनेक प्रकार की समस्यायें मनुष्य को तनावग्रस्त कर देती हैं। तनाव का कुप्रभाव मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। जिससे व्यक्ति अनेक प्रकार की बीमारियों का शिकार होकर दु:खी, अशान्त और निराश रहता है। तनाव से मुक्त रहने के लिए अभी तक किसी औषध का निर्माण तो नहीं हुआ है, परन्तु तनाव मुक्ति के लिए जिन विधियों का परीक्षण हुआ है, उनमें सर्वोत्तम विधि है—ईश्वर का चिन्तन, मनन और ध्यान।

महर्षि दयानन्द का मत—*''जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष-दु:ख छूटकर परमेश्वर के गुण- कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए इससे इसका फल पृथक् होगा, परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है?''*

अग्निहोत्र (देवयज्ञ) के विषय में विचार

अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः। मैत्रायणी उपनिषद् 6.36

स्वर्ग (सुख विशेष को) चाहने वाला अग्निहोत्र करे।

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। शतपथ ब्राह्मण 1.5.4.5.

यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति।

छान्दोग्य उ. 2.23.1

धर्मरूपी वृक्ष की तीन शाखायें हैं—यज्ञ करना, स्वाध्याय करना और दान देना।

अग्निहोत्र—अग्नि = परमेश्वर की प्राप्ति के लिए। होत्रम् = आहुतियाँ देना 'अग्निहोत्र' कहलाता है। अथवा पर्यावरण की शुद्धि के लिए अग्नि में आहुतियाँ देना 'अग्निहोत्र' कहलाता है।

देवयज्ञ—देव = ईश्वर की उपासना अथवा विद्वानों की सेवा करना, संगति करना और उपदेश ग्रहण करना अथवा भौतिक अग्नि, जल, वायु आदि की शुद्धि के लिए आहुतियाँ देना इत्यादि क्रियाओं वाला कर्म ''देवयज्ञ'' है। इस प्रकार इन दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है। इनके अतिरिक्त यज्ञ, हवन, होम ये शब्द भी 'अग्निहोत्र' के पर्यायवाची हैं।

अग्निहोत्र से पूर्व की तैयारी

अग्निहोत्र का काल—प्रात:काल सूर्योदय के बाद और सायंकाल सूर्यास्त से पहले अग्निहोत्र करना चाहिए।

अग्निहोत्र का अधिकार—स्नान आदि से शुद्ध होकर स्वच्छ वस्त्र पहनकर श्रद्धावान् सभी नर-नारी इस यज्ञ को करने के अधिकारी हैं।

स्थान—अग्निहोत्र करने का स्थान शुद्ध-शान्त तथा स्वच्छ वायु के आवागमन वाला होना चाहिए।

बैठने की दिशा—यजमान पत्नी सहित यज्ञ कुण्ड के पश्चिम दिशा में पूर्व की ओर मुख करके बैठें। यजमान के दाहिने ओर उसकी पत्नी बैठेगी। पुरोहित दक्षिण दिशा में उत्तर की ओर मुख करके बैठे। परिवार के अन्य सदस्य व आगन्तुक यथा स्थान बैठें।

यज्ञ कुण्ड—यज्ञ कुण्ड किसी धातु अथवा मिट्टी का हो। भूमि में भी ईंट अथवा मिट्टी से यज्ञ कुण्ड, जितनी आहुतियाँ देनी हों, उसके अनुसार छोटा या बड़ा बनाया जा सकता है।

पुरोहित—यदि यजमान अग्निहोत्र स्वयं करने में असमर्थ हो तो किसी योग्य, परोपकारी, धार्मिक, लोभ रहित, सदाचारी, विद्वान् को निमन्त्रित करके उससे अग्निहोत्र सम्पन्न कराये।

घृत—शुद्ध घृत गर्म करके छानकर उसमें केसर, कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ मिलाकर जितनी आहुतियाँ देनी हैं उतना ही पात्र में डालकर यजमान अपने सामने रख ले। यदि गौ का घी हो तो सर्वोत्तम है। आहुति देने के लिए एक लम्बी डण्डी वाली चम्मच भी साथ रखें।

सामग्री—सामग्री में निम्नलिखित चार प्रकार के पदार्थ होने चाहिएं—

1. **सुगन्धित पदार्थ**— तुलसी, इलायची, कपूर, लौंग, दालचीनी, गुग्गल, चन्दन, केसर, अगर, तगर, जायफल, जावित्री, कस्तूरी, बालछड़, नरकचूरा, सुगन्धबाला आदि। केसर, कस्तूरी आदि को घी में भी मिला लेना चाहिए।

2. **पुष्टिकारक पदार्थ**—घृत, दूध, फल, कन्द, चावल, जौ, तिल आदि।

3. **मधुर पदार्थ**—शहद, गुड़, खाण्ड, शक्कर, किशमिश, छुआरा आदि।

4. **रोगनाशक पदार्थ**—गिलोय, बासा आदि रोग निवारक विविध ओषधियाँ ली जा सकती हैं।

इस प्रकार सामग्री तैयार करके उसमें अच्छे प्रकार घृत मिलाएं और पात्रों में डालकर पात्रों को यज्ञ कुण्ड के चारों ओर रख लें।

स्थाली पाक—भात, खीर, हलवा आदि कोई एक नमक रहित मिष्टान्न पदार्थ यज्ञ से पहले ही बनाकर यज्ञ कुण्ड के समीप रख लें।

आहुतियों का परिमाण—घृत की एक आहुति, छः माशे (लगभग 5 ग्राम) से कम नहीं होनी चाहिए तथा सामग्री व स्थालीपाक की आहुति एक छटांक (लगभग 50 ग्राम) से अधिक नहीं होनी चाहिए। यह परिमाण साधारण यज्ञों का है। आहुतियाँ सदैव प्रज्वलित अग्नि पर डालें, जिससे धुआं न होने पाये।

समिधा—पलाश, शमी, पीपल, आम, गूलर, बड़,

बेल, चन्दन आदि दुर्गन्धरहित वृक्षों की समिधा यज्ञ कुण्ड के अनुसार काटकर रख लें। कुछ समिधायें यज्ञ शुरू होने से पहले ही यज्ञ कुण्ड में रख लें। आठ-आठ अंगुल लम्बी व कनिष्ठा अंगुल जितनी मोटी तीन समिधाएं यजमान तथा तीन समिधाएं यजमान की पत्नी अपने सामने रख ले। समिधाएं घुन लगी हुई और बहुत पुरानी न हों।

पानी—एक लौटा या घड़ा पानी का भरकर यज्ञ कुण्ड के समीप रख लें। पानी से भरे हुए चार गिलास तथा उनमें एक-एक चम्मच डालकर यज्ञ कुण्ड के चारों ओर रख लें।

दीपक—घृत और बत्ती से दीपक जलाकर रख लें।

अन्य समान—फूल, चावल, हल्दी, कपूर या रुई, माचिस, चिमटा, तौलिया, पंखा, यज्ञोपवीत, वेदी को सजाने के लिए रंग, प्रसाद, हलवा आदि जो आगुन्तकों को देना हो, यज्ञ कुण्ड के पास रख लें।

दक्षिणा—अग्निहोत्र के बाद अपनी सामर्थ्य के अनुसार पुरोहित को श्रद्धा और सत्कारपूर्वक दक्षिणा देकर तथा भोजन कराकर विदा करें। दक्षिणा के बिना यज्ञ पूर्ण नहीं होता।

ऋत्विक् (पुरोहित) वरण की विधि

यदि यजमान स्वयं अग्निहोत्र करने में असमर्थ हो तो ऋत्विक् (पुरोहित) को सम्मानपूर्वक यज्ञ कुण्ड की दक्षिण दिशा में निम्नलिखित प्रार्थना करके बैठाये—

यजमान प्रार्थना करे—

ओमावसो सदने सीद (हे भगवन्! यज्ञ के आसन

पर बैठिये)। ऋत्विक् (पुरोहित) उत्तर दे—

ओम् सीदामि (जी हाँ बैठता हूँ)।

यजमान प्रार्थना करे—

ओ३म् तत् सत्-अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे वैवस्वते मन्वन्तरे---अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे--- संवत्सरे--- अयने--- ऋतौ--- मासे--- पक्षे--- तिथौ--- दिवसे--- नक्षत्रे--- लग्ने--- मुहूर्ते--- देशे--- प्रान्ते--- जनपदे--- नगरे--- स्थाने--- यज्ञकर्मकरणाय--- गोत्रोत्पन्नः श्रीमतः--- पौत्रः श्रीमतः--- पुत्रः---नामाहं भवन्तं पुरोहितं वृणे।

ऋत्विक् (पुरोहित) उत्तर दे—

वृतोऽस्मि।

सन्ध्या-उपासना = ब्रह्मयज्ञ

सन्ध्योपासना प्रारम्भ करने से पूर्व शरीर एवं अन्तःकरण की शुद्धि करके मार्जन एवं प्राणायाम करें तथा निम्नलिखित गायत्री मन्त्र बोलकर शिखा बान्धें, जिससे केश इधर-उधर न गिरें। यदि केश सुव्यवस्थित हों तो शिखा बान्धने की आवश्यकता नहीं।

गायत्री मन्त्र

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

ऋग्वेद मण्डल 3, सूक्त 62, मन्त्र 10; यजुर्वेद अध्याय 36, मन्त्र 3.

शब्दार्थ

(ओ३म्) यह ईश्वर का मुख्य और सर्वोत्तम नाम है। इसका अर्थ है—सबकी रक्षा करने वाला। यह शब्द **'अ', 'उ'** तथा **'म्'** के संयोग से बना है। **'अ'** के अर्थ हैं—विराट्, अग्नि, विश्व आदि। **'उ'** के अर्थ हैं— हिरण्यगर्भ, वायु, तेजस् आदि और **'म्'** के अर्थ हैं—ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ आदि। इस प्रकार **'ओ३म्'** नाम से ईश्वर के सब नामों का ग्रहण हो जाता है। **(भूः)** प्राणाधार, प्राणों से भी प्यारा। **(भुवः)** सब प्रकार के दुःखों का नाश करने वाला। **(स्वः)** स्वयं सुखस्वरूप और सुख देने वाला। **(तत्)** उस। **(सवितुः)** समस्त संसार को उत्पन्न करने वाले। **(वरेण्यम्)** ग्रहण करने योग्य, अति श्रेष्ठ। **(भर्गः)** शुद्ध स्वरूप। **(देवस्य)** ईश्वर का। **(धीमहि)** ध्यान

करें। (**धियः**) बुद्धियों को। (**यः**) जो पूर्वोक्त ईश्वर है वह। (**नः**) हमारी। (**प्रचोदयात्**) (शुभकर्मों में) प्रेरित करे।

आचमन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का एक बार उच्चारण करके दायीं हथेली में जल लेकर तीन आचमन करें (जल को पीयें)। जल की मात्रा इतनी हो कि एक आचमन से हृदय तक जल चला जाये। आचमन कण्ठस्थ कफ और पित्त को दूर करता है। आचमन के बाद हाथ धो लें। यदि जल न हो तो भी सन्ध्या अवश्य करें।

ओ३म्। शन्नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ ऽ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शँयो॒र॒भिस्र॑वन्तु नः॥

ऋग्वेद 10.9.4, यजुर्वेद 36.12.

शब्दार्थ

(**शम्**) शान्तिदायक (**नः**) हमारे लिए। (**देवीः**) दिव्य गुण सम्पन्न। (**अभिष्टये**) मनोकामना पूर्ण करने के लिए। (**आपः**) हे सर्वव्यापक प्रभो! (**भवन्तु**) हो जाओ। (**पीतये**) परम शान्ति का पान कराने के लिए (**शंयोः**) शान्ति व कल्याण की। (**अभि**) चारों ओर से। (**स्रवन्तु**) वर्षा करो। (**नः**) हम पर।

अङ्गस्पर्श मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की दो बीच की अंगुलियों— मध्यमा और अनामिका से जल का स्पर्श करके अपने अङ्गों का स्पर्श करें। पहले दायें भाग का और फिर बायें भाग का स्पर्श करें।

ओ३म् वाक् वाक्। —इस मन्त्र से मुख के दायें व फिर बायें भाग

ओ३म् प्राणः प्राणः। —इससे नाक के दायें व फिर बायें छिद्र का

ओ३म् चक्षुः चक्षुः। —इस मन्त्र से दायीं व फिर बायीं आँख का

ओ३म् श्रोत्रं श्रोत्रम्। —इस मन्त्र से दायें व फिर बायें कान का

ओ३म् नाभिः। —इस मन्त्र से नाभि का

ओ३म् हृदयम्। —इस मन्त्र से हृदय का

ओ३म् कण्ठः। —इस मन्त्र से कण्ठ का

ओ३म् शिरः। —इस मन्त्र से सिर का

ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्।

—इससे दायीं व फिर बायीं भुजा का

ओ३म् करतल-करपृष्ठे।—इस मन्त्र से दोनों हाथों की हथेलियों तथा हाथ के उपरि भाग का स्पर्श करें।

शब्दार्थ

(ओ३म्) हे ईश्वर! **(वाक् वाक्)** वाग् इन्द्रिय **(जिह्वा)** और इसकी शक्ति बलवान् और यश देने वाली हो।

(प्राणः प्राणः) प्राण इन्द्रिय **(नाक)** और इसकी शक्ति बलवान् और यश देने वाली हो। **(चक्षुः चक्षुः)** आँखें और उनकी शक्ति बलवान् और यश देने वाली हो। **(श्रोत्रं श्रोत्रम्)** कान और उनकी शक्ति बलवान् और यश देने वाली हो। **(नाभिः)** नाभि बलवान् और यश देने वाली हो। **(हृदयम्)** हृदय बलवान् और यश देने वाला हो।**(कण्ठः)** कण्ठ बलवान् और यश देने वाला हो। **(शिरः)** सिर बलवान् और यश देने वाला हो। **(बाहुभ्याम्)** दोनों भुजाओं से।

मार्जन मन्त्र

मार्जन का अर्थ है शुद्धि, पवित्रता अर्थात् शरीर को शुद्ध-पवित्र करने के मन्त्र। बायीं हथेली में पुनः जल लेकर दायें हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने अङ्गों पर जल छिड़कें और कामना करें कि मेरे सभी अङ्ग शुद्ध पवित्र रहें।

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। —इससे सिर पर

ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः। —इससे दोनों आँखों पर

ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। —इससे कण्ठ पर

ओ३म् महः पुनातु हृदये। —इससे हृदय पर

ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। —इससे नाभि पर

ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। —इससे दोनों पैरों पर

ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। —इससे पुनः सिर पर

ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

—इससे सारे शरीर पर छींटे दें।

शब्दार्थ

(**ओ३म्**) हे ईश्वर! (**भूः**) हे प्राणाधार! (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**शिरसि**) सिर में, चिन्तन शक्ति में। (**भुवः**) हे दुःख विनाशक! (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**नेत्रयोः**) आँखों में, दर्शन शक्ति में। (**स्वः**) हे सुख स्वरूप! (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**कण्ठे**) कण्ठ में, वाणी में। (**महः**) हे महान् प्रभो! (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**हृदये**) हृदय में। (**जनः**) हे उत्पादक! (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**नाभ्याम्**) नाभि में। (**तपः**) हे ज्ञान स्वरूप! दुष्टों को सन्ताप देने वाले। (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**पादयोः**) पैरों में। (**सत्यम्**) हे सत्य स्वरूप! अविनाशी प्रभु। (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**पुनः**) फिर से। (**शिरसि**) सिर में, चिन्तन शक्ति में। (**खं ब्रह्म**) आकाश के समान सर्वव्यापक और महान् ईश्वर। (**पुनातु**) पवित्रता करो। (**सर्वत्र**) मेरे सम्पूर्ण शरीर में।

प्राणायाम मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र बोलकर कम से कम तीन प्राणायाम करें।

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः।
ओ३म् महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः।
ओ३म् सत्यम्। —तैत्तिरीय आरण्यक (प्र. 10. अनु. 27)

अघमर्षण मन्त्र

अघ = पाप। **मर्षण** = मसलना, नष्ट करना अर्थात् पाप को नष्ट करने की कामना के मन्त्र। इन मन्त्रों में बताये गये सृष्टि क्रम का विचार करें और निश्चय करें कि इस सृष्टि का निर्माण, पालन और संहार करने वाला ईश्वर है। वह *''सबको उत्पन्न करके, सब में व्यापक होके अन्तर्यामि रूप से सबके पाप पुण्यों को देखता हुआ, पक्षपात छोड़के सत्य न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है। ऐसा निश्चित जानके ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, कर्म और वचन से पापकर्मों को कभी न करें। इसी का नाम अघमर्षण है।''*

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

ओ३म्। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो ऽ अर्णवः॥ १॥

ओ३म्। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो ऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी॥ २॥

ओ३म्। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥ ३॥ —ऋग्वेद 10.190.1-3

शब्दार्थ

(**ऋतम्**) गतिशील चेतन जगत् या वेद ज्ञान (**च**) और। (**सत्यम्**) अचेतन जगत्। (**च**) और। (**अभि इद्धात्**) सब ओर से प्रकाशित। (**तपसः**) ज्ञान रूप सामर्थ्य से। (**अध्यजायत**) उत्पन्न हुआ। (**ततः**) उसी ईश्वर के सामर्थ्य से। (**रात्री**) प्रलयरूपी रात्रि। (**अजायत**) उत्पन्न हुई। (**ततः**) उसी ईश्वर के सामर्थ्य से। (समुद्रः) मेघ रूपी समुद्र। (**अर्णवः**) पृथिवी का समुद्र।

(**समुद्रात्**) मेघ रूपी समुद्र से। (**अर्णवात्**) पृथिवी के समुद्र से। (**अधि**) बाद में। (**संवत्सरः**) क्षण, मुहूर्त, प्रहर आदि काल युक्त वर्ष। (**अजायत**) उत्पन्न हुआ। (**अहोरात्राणि**) दिन और रात। (**विदधत्**) विधिपूर्वक बनाये। (**विश्वस्य**) संसार के। (**मिषतः**) सुगमता से। (**वशी**) वश में रखने वाले ईश्वर ने।

(**सूर्यचन्द्रमसौ**) सूर्य व चन्द्रमा को। (**धाता**) ईश्वर ने। (**यथापूर्वम्**) पहले वाली सृष्टि के समान। (**अकल्पयत्**) बनाया है। (**दिवम्**) द्युलोक को। (**च**) और। (**पृथिवीम्**) पृथिवी को। (**च**) और। (**अन्तरिक्षम्**) आकाश को। (**अथ**) इसके बाद। (**स्वः**) आकाश में स्थिर लोक लोकान्तरों को।

आचमन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का एक बार उच्चारण करके पूर्ववत् तीन बार आचमन करें।

ओ३म्। शन्नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ ऽ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शँयो॒र॒भिस्र॑वन्तु नः॥

—ऋग्वेद 10.9.4, यजुर्वेद 36.12.

मनसा परिक्रमा मन्त्र

मनसा = मन के द्वारा। **परिक्रमा** = भ्रमण करना अर्थात् मन द्वारा सब दिशाओं में परिक्रमा करके ईश्वर की सर्वव्यापक सत्ता का अनुभव करना। पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नीचे और ऊपर सब जगह उसी की सत्ता है।

ओ३म्। प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ 1॥

भावार्थ– (प्राची दिगग्निरधिपतिः) जो प्राची दिक्, अर्थात् जिस ओर अपना मुख हो, उस ओर अग्नि जो ज्ञानस्वरूप अधिपति, जो सब जगत् का स्वामी, **(असितः)** बन्धनरहित, **(रक्षिता)** सब प्रकार से रक्षा करने वाला, **(आदित्या इषवः)** जिसके बाण आदित्य की किरण हैं। **(तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः नमः)** उन सब गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। **(रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु)** जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करने वाले हैं, और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं, उनको हमारा नमस्कार हो, इसलिए कि जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करता है, और जिस अज्ञान से धार्मिक पुरुष का तथा पापी पुरुष का हम लोग द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाण रूप

के मुख में दग्ध कर देते हैं कि जिससे किसी से हम लोग वैर न करें, और कोई भी प्राणी हमसे वैर न करे, किन्तु हम सब लोग परस्पर मित्रभाव से वर्तें॥ 1॥

ओ३म्। दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस् तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ 2॥

भावार्थ– (दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिः) जो हमारे दाहिनी ओर दक्षिण दिशा है, उसका अधिपति इन्द्र, अर्थात् पूर्ण ऐश्वर्यवाला **(परमेश्वर)** है। **(तिरश्चिराजी रक्षिता)** जो जीव कीट-पतङ्ग, वृश्चिक तिर्य्यक् आदि कहाते हैं उनकी राजी जो पंक्ति है, उनसे रक्षा करने वाला एक परमेश्वर है। **(पितर इषवः)** जिसकी सृष्टि में ज्ञानी लोग बाण के समान हैं। **(तेभ्यो नमो.)** आगे का अर्थ पूर्व के समान ज्ञान लेना॥ 2॥

ओ३म्। प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ 3॥

भावार्थ– (**प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः**) जो पश्चिम दिशा, अर्थात् अपने पृष्ठ भाग में है, उसमें वरुण जो सबसे उत्तम, सबका राजा परमेश्वर है, (**पृदाकू रक्षितान्नमिषवः**) जो बड़े-बड़े अजगर, सर्पादि विषधारी प्राणियों से रक्षा करने वाला है, जिसके अन्न, अर्थात् पृथिव्यादि पदार्थ बाणों के समान हैं, जो श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों की ताड़ना के निमित हैं। (**तेभ्यो नमो.**) इसका अर्थ पूर्व मन्त्र के समान जान लेना॥ 3॥

ओ३म्। उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ 4॥

भावार्थ–(**उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः**) जो अपनी बाईं ओर उत्तर दिशा है, उसमें सोम नाम से, अर्थात् शान्त्यादि गुणों से आनन्द कराने वाले जगदीश्वर का ध्यान करना चाहिए। (**स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः**) जो अजन्मा और अच्छी प्रकार रक्षा करने वाला है, जिसके बाण विद्युत् हैं। (**तेभ्यो नमो.**) आगे पूर्ववत् जान लेना॥ 4॥

ओ३म्। ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ 5॥

भावार्थ– (ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः) ध्रुव दिशा, अर्थात् जो अपने नीचे की ओर है, उसमें विष्णु, अर्थात् व्यापक नाम से परमात्मा का ध्यान करना। **(कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुधः इषवः)** हरित रङ्गवाले वृक्षादि जिसकी ग्रीवा के समान है। सब वृक्ष जिसके बाण के समान है, उनसे अधोदिशा में हमारी रक्षा करे। **(तेभ्यो नमो.)** आगे पूर्ववत् जान लेना॥ 5॥

ओ३म्। ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः॥ 6॥

—अथर्ववेद 3.27.6

भावार्थ– (ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः) जो अपने ऊपर दिशा है, उसमें बृहस्पति जो वाणी का स्वामी परमेश्वर है, उसको अपना रक्षक जानें। जिसके बाण के समान वर्षा के बिन्दु हैं, उनसे हमारी रक्षा करे। **(तेभ्यो.)** आगे पूर्ववत् जान लेना॥ 6॥

उपस्थान मन्त्र

उप = समीप। **स्थान** = बैठना अर्थात् अपने हृदय में ईश्वर का अनुभव करना। निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने आपको सर्वरक्षक, सर्वशक्तिमान् और प्रकाश स्वरूप प्रभु की पवित्र गोद में बैठा हुआ अनुभव करें—

ओ३म्। उद् वयं तमसस् परि स्वः पश्यन्त ऽ उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ 1॥ —यजुर्वेद 35.14

शब्दार्थ– (**उत्**) अच्छे प्रकार श्रद्धा से। (**वयम्**) हम। (**तमसः**) अज्ञानरूपी अन्धकार से। (**परि**) पृथक् रहने वाले। (**स्वः**) सुखस्वरूप ईश्वर को। (**पश्यन्त**) अनुभव करते हुए। (**उत्तरम्**) प्रलय के बाद भी विद्यमान्। (**देवम्**) ईश्वर को। (**देवत्रा**) देवों के भी देव को। (**सूर्यम्**) चराचर के सञ्चालक ईश्वर को। (**अगन्म**) प्राप्त करें। (**ज्योतिः**) प्रकाशस्वरूप ईश्वर को। (**उत्तमम्**) सर्वोत्तम को।

ओ३म्। उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ 2॥—यजुर्वेद 33.31

शब्दार्थ–(**जातवेदसम्**) जगत् को उत्पन्न करने वाले और जानने वाले (ईश्वर को)। (**देवम्**) दिव्य गुण वाले को। (**वहन्ति**) प्राप्त कराते हैं, जनाते हैं। (**केतवः**) सृष्टि के विविध पदार्थ, नियम तथा वेदमन्त्र। (**दृशे**) ज्ञान प्राप्त करने के लिए। (**विश्वाय**) पूर्ण रूप से। (**सूर्यम्**) चराचर के सञ्चालक ईश्वर को।

ओ३म्। चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर् मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी ऽ अन्तरिक्षꣳ सूर्य ऽऽ आत्मा जगतस् तस्थुषश्च स्वाहा॥ 3॥ —यजुर्वेद 7.42

शब्दार्थ– (**चित्रम्**) विलक्षण परमेश्वर! (**देवानाम्**) विद्वानों के हृदय में। (**उद् अगात्**) अच्छी प्रकार प्रकाशित हुआ है। (**अनीकम्**) वह ईश्वर सबका उत्तम बल है, आश्रय है। (**चक्षुः**) सबका द्रष्टा और दर्शयिता है। (**मित्रस्य**) मित्र स्वभाव वाले उपासक का। (**वरुणस्य**) श्रेष्ठ आचरण वाले उपासक का। (**अग्नेः**) उत्तम ज्ञान वाले उपासक का। (**आप्रा**) सब ओर से धारण करके रक्षा कर रहा है। (**द्यावा पृथिवी**) द्युलोक और पृथिवी लोक। (**अन्तरिक्षम्**) आकाश। (**सूर्यः**) संसार का उत्पादक और प्रकाशक। (**आत्मा**) अन्तर्यामी रूप से व्याप्त। (**जगतः**) चर (जीव) जगत् का। ? (**तस्थुषः**) जड़ जगत् का। च और। (**स्वाहा**) सत्य कह रहा हूँ (अनुभव कर रहा हूँ)।

ओ३म्। तच्चक्षुर् देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ 4॥

शब्दार्थ– (**तत्**) वह ईश्वर। (**चक्षुः**) सबका द्रष्टा और दर्शयिता है। (**देवहितम्**) विद्वानों और उपासकों का हितकारी है। (**पुरस्तात्**) सृष्टि के पूर्व से लेकर सदा। (**शुक्रम्**) शुद्ध स्वरूप। (**उच्चरत्**) सर्वोच्च रूप से सर्वत्र विद्यमान है। (**पश्येम**)(उस ईश्वर को हम) देखते रहें। (**शरदः**) वर्षों तक। (**शतम्**) सौ। (**जीवेम**) हम जीवित रहें (उसी का ध्यान करते हुए)। (**शरदः**) वर्षों तक। (**शतम्**) सौ। (**शृणुयाम**)

हम सुनते रहें (उसी के गुण)। (**शरदः**) वर्षों तक। (**शतम्**) सौ। (**प्रब्रवाम**) प्रवचन करते रहें (उसी ईश्वर का)। (**शरदः**) वर्षों तक। (**शतम्**) सौ। (**अदीनाः**) दीनता रहित स्वतन्त्र। (**स्याम**) रहें। (**शरदः**) वर्षों तक। (**शतम्**) सौ। (**भूयः**) अधिक। (**च**) और। (**शरदः**) वर्षों तक। (**शतात्**) सौ से भी अधिक।

गायत्री मन्त्र

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

ऋग्वेद मण्डल 3, सूक्त 62, मन्त्र 10; यजुर्वेद अध्याय 36, मन्त्र 3.

समर्पण मन्त्र

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा, धर्मार्थ-काममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः॥

शब्दार्थ

(**हे ईश्वर!**) हे ईश्वर! (**दयानिधे**) दया के सागर! भवत् आपकी। (**कृपया**) कृपा से। (**अनेन**) इस। (**जप**) जप करने से। (**उपासना**) उपासना से। (**आदिकर्मणा**) योगाभ्यास आदि कर्मों से। (**धर्म**) सत्य और न्याय का आचरण करना। (**अर्थ**) धर्म पूर्वक पदार्थों को प्राप्त करना। (**काम**) धर्म और अर्थ से प्राप्त किये गये पदार्थों का सेवन करना। (**मोक्षाणाम्**) सब प्रकार के दुःखों से छूटकर परम आनन्द में रहना। इन चारों की। (**सद्यः**) शीघ्र ही। (**सिद्धिः**) प्राप्ति। (भवेत्) होवे। (**नः**) हम को।

नमस्कार मन्त्र

ओ३म्। नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ —यजुर्वेद 16.41

शब्दार्थ— (**नमः**) नमस्कार। (**शम्भवाय च**) शान्ति स्वरूप प्रभु के लिए। और (**मयोभवाय च**) सुख स्वरूप प्रभु के लिए। और (**नमः**) नमस्कार। (**शङ्कराय च**) शान्ति देने वाले प्रभु के लिए। और (**मयस्कराय च**) सुख देने वाले प्रभु के लिए। और (**नमः**) नमस्कार। (**शिवाय च**) आनन्द दाता एवं कल्याण करने वाले प्रभु के लिए। और (**शिवतराय च**) और अत्यन्त आनन्द दाता एवं अत्यन्त कल्याण करने वाले प्रभु के लिए।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ इति सन्ध्योपासना ब्रह्मयज्ञः ॥

◆◆◆

दैनिक अग्निहोत्र विधि

आचमन मन्त्र

निम्नलिखित तीन मन्त्र बोलकर दायीं हथेली में जल लेकर तीन आचमन करें। जल की मात्रा इतनी हो कि वह जल कण्ठ से नीचे हृदय तक पहुंचे, न उससे अधिक, न न्यून। इससे अल्प मात्रा में कण्ठस्थ कफ व पित्त की निवृत्ति होती है।

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

—इससे पहला आचमन।

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।

—इससे दूसरा आचमन।

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

—इससे तीसरा आचमन करें।

तैत्तिरीय आरण्यक-प्र. 10 अनु. 32, 35

अङ्गस्पर्श मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की दो बीच की अंगुलियों—मध्यमा और अनामिका से जल स्पर्श करके अपने अङ्गों का स्पर्श करें। पहले दायें भाग का और फिर बायें भाग का स्पर्श करें।

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु।

—इससे मुख के दोनों ओर स्पर्श करें।

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु।

—इससे नाक के दोनों ओर स्पर्श करें।

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।

—इससे दोनों आँखों का स्पर्श करें।

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।

—इससे दोनों कानों का स्पर्श करें।

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु।

—इससे दोनों भुजाओं का स्पर्श करें।

ओ३म् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु।

—इससे दोनों जंघाओं का स्पर्श करें।

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वा मे सह सन्तु।

—इससे सारे शरीर पर जल के छीटें दें।

(पारस्कर गृह्य सूत्र 1.3.25)

अथ ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना-मन्त्राः

अथ = प्रारम्भ अर्थात् प्रारम्भ करते हैं। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के मन्त्रों का पाठ।

ईश्वर-स्तुति = ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का हृदय में स्मरण करके प्रशंसा करना ''**स्तुति**'' कहलाती है।

प्रार्थना = अपने पूर्ण पुरुषार्थ के बाद उत्तम कार्यों में ईश्वर से सहायता की कामना करना प्रार्थना कहलाती है।

उपासना = उप = समीप, आसना = आसन=बैठना, अर्थात् अपने आत्मा में ईश्वर को अनुभव करके उसके आनन्द स्वरूप में मग्न हो जाना। निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ श्रद्धा और भक्ति से अर्थ विचारपूर्वक करें।

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥1॥

—यजुर्वेद 30.3

अर्थ— हे (**सवितः**) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, (**देव**) शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके (**नः**) हमारे (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**दुरितानि**) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (**परा सुव**) दूर कर दीजिए। (**यत्**) जो (**भद्रम्**) कल्याणकारक गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ है, (**तत्**) वह सब हमको (**आ सुव**) प्राप्त कीजिए ॥1॥

ओ३म्। हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 2॥

—यजुर्वेद 13.4

अर्थ— जो (**हिरण्यगर्भः**) स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो (**भूतस्य**) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (**जातः**) प्रसिद्ध (**पतिः**) स्वामी (**एकः**) एक ही चेतनस्वरूप (**आसीत्**) था, जो (**अग्रे**) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (**समवर्त्तत**) वर्त्तमान था, (**सः**) वह (**इमाम्**) इस (**पृथिवीम्**) भूमि (**उत**) और (**द्याम्**) सूर्यादि को (**दाधार**) धारण कर रहा है। हम लोग उस (**कस्मै**) सुखस्वरूप (**देवाय**) शुद्ध परमात्मा के लिए (**हविषा**) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से (**विधेम**) विशेष भक्ति किया करें।

ओ३म्। य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 3॥

—यजुर्वेद 25.13

अर्थ—(**यः**) जो (**आत्मदाः**) आत्मज्ञान का दाता, (**बलदाः**) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, (**यस्य**) जिसकी (**विश्वे**) सब (**देवाः**) विद्वान् लोग

(**उपासते**) उपासना करते हैं और (**यस्य**) जिसका (**प्रशिषम्**) प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, (**यस्य**) जिसका (**छाया**) आश्रय ही (**अमृतम्**) मोक्ष-सुखदायक है, (**यस्य**) जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही (**मृत्युः**) मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस (**कस्मै**) सुखस्वरूप (**देवाय**) सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (**हविषा**) आत्मा और अन्तःकरण से (**विधेम**) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञापालन करने में तत्पर रहें ॥3॥

ओ३म्। यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽ इद् राजा जगतो बभूव। य ईशे ऽ अस्य द्विपदश् चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 4॥

—यजुर्वेद 23.3

अर्थ— (**यः**) जो (**प्राणतः**) प्राणवाले और (**निमिषतः**) अप्राणिरूप (**जगतः**) जगत् का (**महित्वा**) अपने अनन्त महिमा से (**एकः इत्**) एक ही (**राजा**) विराजमान राजा (**बभूव**) है, (**यः**) जो (**अस्य**) इस (**द्विपदः**) मनुष्यादि और (**चतुष्पदः**) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (**ईशे**) रचना करता है, हम लोग उस (**कस्मै**) सुखस्वरूप (**देवाय**) सकलैश्वर्य के देनेहारे परमात्मा के लिए (**हविषा**) अपनी सकल उत्तम सामग्री से (**विधेम**) विशेष भक्ति करें ॥4॥

ओ३म्। येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। यो ऽ अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 5॥

—यजुर्वेद 32.6

अर्थ— (**येन**) जिस परमात्मा ने (**उग्रा**) तीक्ष्ण स्वभाववाले (**द्यौः**) सूर्य आदि (**च**) और (**पृथिवी**) भूमि को (**दृढा**) धारण, (**येन**) जिस जगदीश्वर ने (**स्वः**) सुख को (**स्तभितम्**) धारण और (**येन**) जिस ईश्वर ने (**नाकः**) दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, (**यः**) जो (**अन्तरिक्षे**) आकाश में (**रजसः**) सब लोकलोकान्तरों को (**विमानः**) विशेष मानयुक्त, अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस (**कस्मै**) सुखदायक (**देवाय**) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (**हविषा**) सब सामर्थ्य से (**विधेम**) विशेष भक्ति करें॥ 5॥

ओ३म्। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास् ते जुहुमस् तन्नो ऽ अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ 6॥

—ऋग्वेद 10.121.10

अर्थ— हे (**प्रजापते**) सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! (**त्वत्**) आपसे (**अन्यः**) भिन्न दूसरा कोई (**ता**) उन (**एतानि**) इन (**विश्वा**) सब (**जातानि**) उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को (**न**) नहीं (**परि बभूव**) तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। (**यत्कामाः**) जिस-जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग (**ते**) आपका (**जुहुमः**) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, (**तत्**) उस-उसकी कामना (**नः**) हमारी सिद्ध (**अस्तु**) होवे। जिससे (**वयम्**) हम लोग (**रयीणाम्**) धनैश्वर्यों के (**पतयः**) स्वामी (**स्याम**) होवें ॥6॥

ओ३म्। स नो बन्धुर् जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा ऽ अमृतमानशानास् तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥ 7॥ —यजुर्वेद 32.10

अर्थ—हे मनुष्यो! (**सः**) वह परमात्मा (**नः**) अपने लोगों को (**बन्धुः**) भ्राता के समान सुखदायक, (**जनिता**) सकल जगत् का उत्पादक, (**सः**) वह (**विधाता**) सब कामों का पूर्ण करनेहारा, (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**भुवनानि**) लोकमात्र और (**धामानि**) नाम, स्थान, जन्मों को (**वेद**) जानता है, और (**यत्र**) जिस (**तृतीये**) सांसारिक सुख-दुःख से रहित, नित्यानन्दयुक्त, (**धामन्**) मोक्षस्वरूप, धारण करनेहारे परमात्मा में (**अमृतम्**) मोक्ष को (**आनशानाः**) प्राप्त होके (**देवाः**) विद्वान् लोग (**अध्यैरयन्त**) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा

अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें॥7॥

ओ३म्। अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम॥ 8॥ —यजुर्वेद 40.16

अर्थ—हे (**अग्ने**) स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे, (**देव**) सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे (**विद्वान्**) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (**अस्मान्**) हम लोगों को (**राये**) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (**सुपथा**) अच्छे, धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**वयुनानि**) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (**नय**) प्राप्त कराइए और (**अस्मत्**) हमसे (**जुहुराणम्**) कुटिलतायुक्त (**एनः**) पापरूप कर्म को (**युयोधि**) दूर कीजिए। इस कारण हम लोग (**ते**) आपकी (**भूयिष्ठाम्**) बहुत प्रकार की स्तुतिरूप (**नमः उक्तिम्**) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (**विधेम**) सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ॥8॥

॥ इति-ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना-प्रकरणम्॥

अग्न्याधान

यज्ञ कुण्ड में अग्नि स्थापित करने की विधि

अग्नि-ज्वालन मन्त्र

समिधा, कपूर अथवा रुई की घृत लगी बत्ती में से किसी एक को दीपक या दियासिलाई से निम्नलिखित मन्त्र बोलकर अग्नि प्रज्वलित करें।

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः॥

—गोभिल गृह्य सूत्र 1.1.11,शतपथ ब्रा. 3.2.1.6

अग्नि-स्थापन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके जलती हुई अग्नि को यज्ञ कुण्ड में समिधाओं के बीच में स्थापित करें।

ओ३म्। भूर् भुवः स्वुर् द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास् ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

—यजुर्वेद 3.5

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके वेदि में स्थापित अग्नि को घी, कपूर तथा पंखे से हवा करके प्रदीप्त करें—

ओ३म्। उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि

त्वमि॑ष्टापू॒र्ते सꣳ सृ॑जेथाम॒यं च॑। अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ ऽ अध्युत्त॑रस्मिन् विश्वे॑ देवा॒ यज॑मानश्च सीदत॥

—यजुर्वेद 15.54

समिधा आधान के मन्त्र

पहले से ही तैयार की हुई आठ-आठ अङ्गुल की तीनों समिधाओं को घी में डुबो लें।

पहली समिधा निम्नलिखित मन्त्र बोलकर यज्ञकुण्ड में जलती हुई अग्नि पर रखें।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ 1॥

—आश्वलायन गृह्य सूत्र 1.10.12

दूसरी समिधा निम्नलिखित दो मन्त्रों का उच्चारण करके यज्ञकुण्ड में रखें।

ओ३म्। स॒मिधा॒ग्निं दु॑वस्यत घृ॒तैर् बो॑धय॒तात्ति॑थिम्। आस्मि॑न् ह॒व्या जु॑होतन॥

ओ३म्। सुस॑मिद्धाय शो॒चिषे॑ घृ॒तं ती॒व्रं

जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥
इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ 2॥

—यजुर्वेद 3.1-2

तीसरी समिधा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके यज्ञकुण्ड में रखें।

ओ३म्। तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा॥
इदमग्नयेऽङ्गिरसे - इदन्न मम॥ ३॥

—यजुर्वेद 3.3

पञ्च घृताहुति-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का पांच बार उच्चारण करें और प्रत्येक बार घी की आहुति प्रदान करें।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥
इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥

—आश्वलायन गृह्य सूत्र 1.10.12

जल-सेचन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए दायीं अञ्जलि में जल लेकर यज्ञकुण्ड के चारों ओर निर्देशानुसार जल सेचन करें —

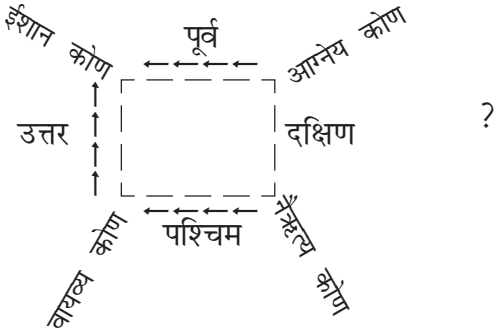

?

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व॥

—इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड की पूर्व दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥

—इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड की पश्चिम दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व॥

—इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड की उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर

(गोभिल गृह्य सूत्र प्र.1, ख. 3, सू.1-3। छान्दोग्य ब्राह्मण 1.1)

ओ३म्। देव॑ सवितः॒ प्रसु॑व य॒ज्ञं प्रसु॑व य॒ज्ञप॑तिं॒ भगा॑य। दि॒व्यो ग॑न्ध॒र्वः के॑त॒पूः केतं॑ नः पुनातु वा॒चस्पति॒र् वाचं॑ नः स्वदतु॥

—यजुर्वेद 30.1

इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड के पूर्व-दक्षिण अर्थात् आग्नेय कोण से प्रारम्भ करके दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम-उत्तर, उत्तर-पूर्व इस क्रम से प्रदक्षिणा की तरह चारों ओर जल सेचन करें और आग्नेय कोण पर जहां से प्रारम्भ किया था वहीं पहुंच कर विराम लें।

आघार-आज्याहुति मन्त्र

आघार = तरड़ाना—धारा रूप से। आज्य = घी अर्थात् यज्ञ में घी की धारा प्रवाह रूप से आहुति देना।

निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर में जलती हुई अग्नि पर घी की आहुति दें।

ओ३म्। अ॒ग्नये॒ स्वाहा॥ इदमग्नये—इदं न मम॥

निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण में जलती हुई अग्नि पर घी की आहुति दें।

ओ३म्। सोमा॑य॒ स्वाहा॥ इदं सोमाय—इदं न मम॥ —गोभिल गृह्य सूत्र 1.8.24, यजुर्वेद 22.27

आज्यभागाहुति मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से घी की दो आहुतियाँ यज्ञकुण्ड के मध्य में प्रदान करें।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये—इदं न मम॥

—यजुर्वेद 22.32

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा॥ इदं इन्द्राय—इदं न मम॥

—यजुर्वेद 22.27

प्रातःकालीन आहुतियों के मन्त्र

प्रातःकाल अग्निहोत्र (देवयज्ञ) करते समय निम्नलिखित मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें। यदि दोनों समय का यज्ञ एक साथ किया जा रहा है तो प्रातःकालीन एवं सायंकालीन दोनों समय की आहुतियाँ एक साथ दें।

ओ३म्। सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ 1॥

ओ३म्। सूर्यो वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा॥ 2॥

ओ३म्। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ 3॥

**ओ३म्। सजूर् देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ 4 ॥**

—यजुर्वेद 3.9–10

सायंकालीन आहुतियों के मन्त्र

सायंकाल अग्निहोत्र करते समय निम्नलिखित मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें। तृतीय मन्त्र प्रथम मन्त्र की ही आवृत्ति मात्र है। अतः इस मन्त्र से मौन रह कर आहुति प्रदान करें। सम्भवतः दोनों समय की आहुतियों की संख्या एक समान करने के लिए प्रथम मन्त्र का पुनः पाठ किया गया है।

ओ३म्। अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ 1 ॥

ओ३म्। अग्निर् वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा ॥ 2 ॥

ओ३म्। अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ 3 ॥

ओ३म्। सजूर् देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणो ऽ अग्निर् वेतु स्वाहा ॥ 4 ॥

—यजुर्वेद 3.9–10

प्रातः-सायं दोनों समय की आहुतियों के समान मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से दोनों समय घी और सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें। यदि यज्ञ एक ही समय करना हो तो प्रातःकालीन एवं सायंकालीन आहुतियों के बाद इन मन्त्रें से आहुतियाँ प्रदान करें—

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा॥ इदमग्नये प्राणाय - इदन्न मम॥ 1॥

ओ३म् भुवर् वायवेऽ पानाय स्वाहा॥ इदं वायवेऽ पानाय - इदन्न मम॥ 2॥

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा॥ इदमादित्याय व्यानाय -इदन्न मम॥ 3॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः -इदन्न मम॥ 4॥

ओ३म्। आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर् भुवः स्वरों स्वाहा॥ 5॥

—तैत्तिरीय आरण्यक 10.27

ओ३म्। यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ 6॥

—यजुर्वेद 32.14

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा॥ 7॥

—यजुर्वेद 30.3

ओ३म्। अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम स्वाहा॥ 8॥

—यजुर्वेद 40.16

गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ

निम्नलिखित मन्त्र से घी तथा सामग्री की तीन आहुतियाँ प्रदान करें।

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥

—ऋग्वेद 3. 62.10; यजुर्वेद 36.3

यदि अधिक होम करने की इच्छा हो तो *''स्वाहा'' शब्द अन्त में बोलकर ''गायत्री मन्त्र'' और ''विश्वानि देव...'' दोनों मन्त्रों से या किसी एक से यथेच्छा आहुतियाँ दें।*

पूर्णाहुति मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का तीन बार उच्चारण करें और हर बार घी और सामग्री की आहुति प्रदान करें।

ओ३म् । सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा।

—शतपथ ब्राह्मण 4.2.2.2, 5.2.2.1

पूर्णाहुति के बाद की प्रार्थना

अग्निहोत्र (देवयज्ञ) की पूर्णाहुति के बाद घृत-पात्र में शुद्ध जल डालकर यज्ञ की अग्नि पर हल्का सा तपायें। उस जल को दोनों हथेलियों पर मसल कर यज्ञाग्नि पर हाथ तपाकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए मुख, नेत्र, ललाट आदि अङ्गों पर मालिश करें।

ओ३म् । तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
ओ३म् । वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
ओ३म् । बलमसि बलं मयि धेहि।
ओ३म् । ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
ओ३म् । मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
ओ३म् । सहोऽसि सहो मयि धेहि॥

—यजुर्वेद 19.9

ओ३म् । असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय॥ —शतपथ ब्राह्मण 14.1.1.30

यज्ञ प्रार्थना

पूजनीय प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए॥1॥
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें॥2॥
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को॥3॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें॥4॥
भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की॥5॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये॥6॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो॥7॥
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप! करुणा आपकी सब पर रहे ॥8॥

(रचयिता—पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति)

संघटन सूक्त

ओ३म्। सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥ 1॥

हे प्रभो तुम शक्तिशाली, हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिए धन वृष्टि को॥

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥ 2॥

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम, कर्तव्य के मानी बनो॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि॥ 3॥

हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों॥

समानी व आकूतीः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥ 4॥

हों सभी के दिल तथा, संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरें हों प्रेम से, जिससे बढ़ें सुख सम्पदा॥

—ऋग्वेद 10.191.1-4

विश्व कल्याण की प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दुःखहारी।
सब हों निरोग भगवन्, धन धान्य के भण्डारी ॥1॥
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी ॥2॥

शान्ति पाठ

अग्निहोत्र आदि यज्ञों की सम्पूर्ण विधिा के बाद सबसे अन्त में निम्नलिखित मन्त्र से शान्ति पाठ करें—

ओ३म्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शान्ति-गीत

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिए .....
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में,सकल विश्व में जड़-चेतन में॥
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य-जनों के होवे धन में, और शूद्र के हो चरणन में॥
शान्ति राष्ट्र-निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में।
जीवमात्र के तन में मन में, और जगति के हो कण-कण में॥

॥ इति दैनिक अग्निहोत्र विधि॥

बृहद् अग्निहोत्र विधि

आचमन मन्त्र

निम्नलिखित तीन मन्त्र बोलकर दायीं हथेली में जल लेकर तीन आचमन करें। जल की मात्रा इतनी हो कि वह जल कण्ठ से नीचे हृदय तक पहुंचे, न उससे अधिक, न न्यून। इससे अल्प मात्रा में कण्ठस्थ कफ व पित्त की निवृत्ति होती है।

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

—इससे पहला आचमन।

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।

—इससे दूसरा आचमन।

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

—इससे तीसरा आचमन करें।

—तैत्तिरीय आरण्यक-प्र. 10 अनु. 32, 35

अङ्गस्पर्श मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की दो बीच की अंगुलियों—मध्यमा और अनामिका से जल स्पर्श करके अपने अङ्गों का स्पर्श करें। पहले दायें भाग का और फिर बायें भाग का स्पर्श करें।

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु।

—इससे मुख के दोनों ओर स्पर्श करें।

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु।

—इससे नाक के दोनों ओर स्पर्श करें।

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।

—इससे दोनों आँखों का स्पर्श करें।

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।

—इससे दोनों कानों का स्पर्श करें।

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु।

—इससे दोनों भुजाओं का स्पर्श करें।

ओ३म् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु।

—इससे दोनों जंघाओं का स्पर्श करें।

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वा मे सह सन्तु।

—इससे सारे शरीर पर जल के छीटें दें।

(पारस्कर गृह्य सूत्र 1.3.25)

अथ ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना-मन्त्राः

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ 1 ॥

—यजुर्वेद 30.3

ओ३म्। हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 2 ॥

—यजुर्वेद 13.4

ओ३म्। य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 3 ॥

—यजुर्वेद 25.13

ओ३म्। यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽ इद् राजा जगतो बभूव। य ईशे ऽ अस्य द्विपदश् चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 4 ॥

—यजुर्वेद 23.3

ओ३म्। येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। यो ऽ अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 5॥ —यजुर्वेद 32.6

ओ३म्। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास् ते जुहुमस् तन्नो ऽ अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ 6॥ —ऋग्वेद 10.121.10

ओ३म्। स नो बन्धुर् जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा ऽ अमृतमानशानास् तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥ 7॥ —यजुर्वेद 32.10

ओ३म्। अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम॥ 8॥ —यजुर्वेद 40.16

॥ इति-ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना-प्रकरणम्॥

अथ स्वस्तिवाचनम्

(कल्याण के लिए प्रार्थना)

अथ = प्रारम्भ करना। **स्वस्ति** > सु+अस्ति = उत्तम स्थिति, अर्थात् कल्याणकारी जीवन। **वाचनम्** = उच्चारण करना, प्रार्थना करना। इस प्रकार अर्थ हुआ—कल्याण के लिए प्रार्थना का प्रारम्भ।

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का पाठ करके '**स्वस्तिवाचन**' मंत्रों का पाठ बृहद् अग्निहोत्र, विवाह संस्कार, जन्मदिन, नामकरण, भवन का शिलान्यास, गृह प्रवेश, व्यापार का प्रारम्भ, रक्षाबन्धन, कृष्ण जन्माष्टमी, दीपावली, रामनवमी, साप्ताहिक सत्सङ्ग आदि विशेष अवसरों पर करना चाहिए।

ओ३म्। अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १॥

—ऋग्वेद 1.1.1

ओ३म्। स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥ २॥

—ऋग्वेद 1.1.9

ओ३म्। स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना॥ ३॥ —ऋग्वेद 5.51.11

ओ३म्। स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥ ४॥ —ऋग्वेद 5.51.12

ओ३म्। विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः॥ ५॥ —ऋग्वेद 5.51.13

ओ३म्। स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि॥ ६॥ —ऋग्वेद 5.51.14

ओ३म् । स्व॒स्ति पन्था॒मनु॑ चरेम सूर्याचन्द्र॒मसा॑विव। पुन॒र्द॒दता घ्न॑ता जान॒ता सं ग॑मेमहि॥ ७॥

—ऋग्वेद 5.51.15

ओ३म्। ये दे॒वानां॑ य॒ज्ञिया॑ य॒ज्ञिया॑नां॒ मनो॒र्यज॑त्रा अ॒मृता॑ ऋत॒ज्ञाः। ते नो॑ रासन्तामुरुगा॒यम॒द्य यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ नः॥ ८॥

—ऋग्वेद 7.35.15

ओ३म्। येभ्यो॑ मा॒ता मधु॑म॒त् पिन्व॑ते॒ पय॑: पी॒यूष॑ द्यौरदि॑ति॒रद्रि॑बर्हाः। उ॒क्थ॑शुष्मान् वृषभ॒रान्त्स्वप्न॑स॒स् ताँ आ॑दि॒त्याँ अनु॑ मदा स्व॒स्तये॑॥ ९॥ —ऋग्वेद 10.63.3

ओ३म्। नृ॒चक्ष॑सो॒ अनि॑मिषन्तो अ॒र्हणा॑ बृ॒हद् दे॒वासो॑ अमृत॒त्वमा॑नशुः। ज्योति॑र॒था अहि॑माया॒ अना॑गसो दि॒वो व॒ष्मा॑णं॑ वसते स्व॒स्तये॑॥१०॥ —ऋग्वेद 10.63.4

ओ३म्। सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमायययुर-
परिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास
नमसा सुवृक्तिभिर् महो आदित्याँ अदितिं
स्वस्तये॥ ११॥ —ऋग्वेद 10.63.5

ओ३म्। को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ
विश्वे देवासो मनुषो यति ष्ठन। को वोऽध्वरं
तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः
स्वस्तये॥ १२॥ —ऋग्वेद 10.63.6

ओ३म्। येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः
समिद्धाग्निर् मनसा सप्त होतृभिः। त आदित्या
अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त
सुपथा स्वस्तये॥ १३॥ —ऋग्वेद 10.63.7

ओ३म्। य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो
विश्वस्य स्थातुर् जगतश्च मन्तवः। ते नः
कृतादकृतादेनसस् पर्यद्या देवासः पिपृता
स्वस्तये॥ १४॥ —ऋग्वेद 10.63.8

ओ३म्। भरेष्विन्द्रꣳ सुहवꣳ हवामहेंऽहोमुचꣳ सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये॥ १५॥ —ऋग्वेद 10.63.9

ओ३म्। सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसꣳ सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावꣳ स्वरित्रामनागसम-स्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये॥ १६॥ —ऋग्वेद 10.63.10

ओ३म्। विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः। सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये॥ १७॥ —ऋग्वेद 10.63.11

ओ३म्। अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये॥ १८॥ —ऋग्वेद 10.63.12

ओ३म्। अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर् जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये॥ १९॥ —ऋग्वेद 10.63.13

ओ३म्। यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर् यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये॥ २०॥ —ऋग्वेद 10.63.14

ओ३म्। स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्य१प्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन॥ २१॥ —ऋग्वेद 10.63.15

ओ३म्। स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा॥ २२॥ —ऋग्वेद 10.63.16

ओ३म्। इ॒षे त्वो॒र्जे त्वा॑ वा॒यव॑ स्थ दे॒वो व॑: सवि॒ता प्रार्प॑यतु श्रेष्ठ॒तमाय॒ कर्म॑ण॒ ऽ आप्या॑यध्वमघ्न्या॒ ऽ इन्द्रा॑य भा॒गं प्र॒जाव॑तीरनमी॒वा ऽ अ॑य॒क्ष्मा मा व॑ स्ते॒नऽ ई॑शत माघश॑ꣳसो ध्रु॒वा ऽ अ॒स्मिन् गोप॑तौ स्यात ब॒ह्वीर् यज॑मानस्य प॒शून् पा॑हि॥ २३॥

—यजुर्वेद 1.1

ओ३म्। आ नो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यन्तु वि॒श्वतोऽ द॑ब्धासो॒ऽ अप॑रीतासऽ उ॒द्भिद॑:। दे॒वा नो॑ यथा॒ सद॒मिद् वृ॒धेऽ अस॒न्नप्रा॑युवो रक्षि॒तारो॑ दि॒वेदि॑वे॥ २४॥

—यजुर्वेद 25.14

ओ३म्। दे॒वाना॑ भ॒द्रा सु॑म॒तिर् ऋ॑जू॒य॒तां दे॒वाना॑ꣳ रा॒ति॒र॒भि नो॒ नि॒व॑र्तताम्। दे॒वाना॑ꣳ स॒ख्यमुप॑सेदिमा व॒यं दे॒वा न॒ऽ आयु॒: प्रति॑रन्तु जी॒वसे॑॥ २५॥

—यजुर्वेद 25.15

ओ३म्। तमीशानं जगतस् तस्थुषस् पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ २६॥

—यजुर्वेद 25.18

ओ३म्। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस् तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु॥ २७॥

—यजुर्वेद 25.19

ओ३म्। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस् तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ २८॥

—यजुर्वेद 25.21

ओ३म्। अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥ २९॥

—सामवेद पू० 1.1.1

ओ३म्। त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर् मानुषे जने॥ ३०॥

—सामवेद पू० 1.1.2

ओ३म्। ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पतिर् बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे॥ ३१॥ —अथर्ववेद १.१.१

भावार्थ— हे ज्ञान स्वरूप प्रभो! हम कल्याण के लिए आपकी स्तुति कर रहे हैं। आप सबके पालक, रक्षक, न्यायकारी, चराचर संसार के स्वामी, लोक-लोकान्तरों के निर्माता, दुष्टों को कर्म फल देकर रुलाने वाले, श्रेष्ठों के मित्र, ऐश्वर्यशाली और प्रकाश स्वरूप हो। आपकी कृपा से हम सुख और आनन्द के सागर में गोते लगाते रहें। हे दयालु देव! आपकी दया से कल्याण के झरने झरते रहें, खुशियों के गान होते रहें, आनन्द की गङ्गा बहती रहे और हम उपासक आत्मविभोर होकर आपके गीत गाते रहें।

हे कल्याण के भण्डार प्रभो! हमें सब प्रकार का कल्याण प्रदान करो। सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, जल, विद्युत्, मेघ, पृथिवी, अन्तरिक्ष आदि सभी दिव्य शक्तियाँ हमारा कल्याण करें। हम कानों से कल्याणकारी मधुर वचनों को सुनें, आँखों से कल्याण को ही देखें।

हे दयालु देव! ऐसी दया करो कि हम सरल स्वभाव वाले परोपकारी, उदारचेता, विद्वानों, वैज्ञानिकों के सत्कार और सम्पर्क

से ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा लेकर यशस्वी, ऐश्वर्यशाली और दीर्घजीवी हों। हमारे घर धन-धान्य से भरे हुए, सुन्दर और सुख दायक हों। हमें सुदृढ़ शरीर, उत्तम बुद्धि और उत्तम सन्तान प्रदान करो।

हे प्रभो! हम यज्ञरूपी नौका में बैठकर, शुभ संकल्प वाले होकर, श्रेष्ठ कर्म करते हुए, संसार सागर को पार करके शान्ति के परम धाम मोक्ष को प्राप्त करें। यही हमारी कामना है, यही प्रार्थना है, यही याचना है। हे सर्वेश्वर! स्वीकार करो। स्वीकार करो। स्वीकार करो।

॥ इति स्वस्ति-वाचनम् ॥

अथ शान्तिकरणम्

(शान्ति के लिए प्रार्थना)

अथ = प्रारम्भ। **शान्ति** = सब प्रकार के दुःख, सन्ताप और उपद्रवों को दूर करके शान्ति को। **करणम्** = प्राप्त करना। इस प्रकार अर्थ हुआ—शान्ति के लिए प्रार्थना का प्रारम्भ। बृहद् अग्निहोत्र, साप्ताहिक सत्सङ्ग, जन्मदिन, नामकरण, गृहप्रवेश आदि अवसरों पर ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का पाठ करके 'स्वस्तिवाचन' एवं 'शान्तिकरण' के मन्त्रों का पाठ करना चाहिये।

ओ३म्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ॥ १॥

—ऋग्वेद 7.35.1

ओ३म्। शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥ २॥

—ऋग्वेद 7.35.2

ओ३म्। शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी

बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु॥ ३॥ —ऋग्वेद 7.35.3

ओ३म्। शं नो अग्निर् ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः॥ ४॥ —ऋग्वेद 7.35.4

ओ३म्। शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर् वनिनो भवन्तु शं नो रजसस् पतिरस्तु जिष्णुः॥ ५॥ —ऋग्वेद 7.35.5

ओ३म्। शं न इन्द्रो वसुभिर् देवो अस्तु शमादित्येभिर् वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर् जलाषः शं नस् त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु॥ ६॥ —ऋग्वेद 7.35.6

ओ३म्। शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां

मितयो भवन्तु शं नः प्रस्व१ः शम्वस्तु वेदिः॥ ७॥ —ऋग्वेद 7.35.7

ओ३म्। शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः॥ ८॥ —ऋग्वेद 7.35.8

ओ३म्। शं नो अदितिर् भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः॥ ९॥ —ऋग्वेद 7.35.9

ओ३म्। शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः॥ १०॥ —ऋग्वेद 7.35.10

ओ३म्। शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः

शमु॑ रा॒ति॒षाच॒: शं नो॑ दि॒व्याः पार्थि॑वा॒: शं नो॒ अप्या॑: ॥ ११ ॥

—ऋग्वेद 7.35.11

ओ३म्। शं न॑: स॒त्यस्य॒ पत॑यो भवन्तु॒ शं नो॒ अर्व॑न्त॒: शमु॑ सन्तु॒ गाव॑:। शं न॑ ऋ॒भव॑: सुकृ॒त॑: सुहस्ता॒: शं नो॑ भवन्तु पि॒तरो॒ हवे॑षु॥ १२ ॥

—ऋग्वेद 7.35.12

ओ३म्। शं नो॑ अ॒ज एकपाद् दे॒वो अ॑स्तु॒ शं नोऽहि॑र् बुध्न्य१॒॑: शं स॑मु॒द्रः। शं नो॑ अ॒पां नपा॑त् पे॒रुर॑स्तु॒ शं न॒: पृश्नि॑र् भवतु दे॒वगो॑पा॥ १३ ॥

—ऋग्वेद 7.35.13

ओ३म्। इन्द्रो॒ विश्व॑स्य राजति। शन्नो॑ ऽ अस्तु द्वि॒पदे॒ शं चतु॑ष्पदे॥ १४॥

—ऋग्वेद 7.35.14

ओ३म्। शन्नो॒ वात॑: पवता॒ꣳ शन्न॑स् तपतु॒ सूर्य॑:।शन्न॒: कनि॑क्रदद् दे॒वः प॒र्जन्यो॑

ऽ अभि वर्षतु॥ १५॥ —ऋग्वेद 7.35.15

ओ३म्। अहानि शम्भवन्तु नः शꣳ रात्रीः प्रति धीयताम्। शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शँ योः॥ १६॥ —ऋग्वेद 7.35.16

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शँयोरभिस्त्रवन्तु नः॥ १७॥

—यजुर्वेद 36.12

ओ३म्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ १८॥ —यजुर्वेद 36.17

ओ३म्। तच्चक्षुर् देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ

शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ १९॥ —यजुर्वेद 36.24

ओ३म्। यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २०॥ —यजुर्वेद 34.1

ओ३म्। येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २१॥ —यजुर्वेद 34.2

ओ३म्। यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २२॥ —यजुर्वेद 34.3

ओ३म्। येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस् तायते

सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २३॥

—यजुर्वेद 34.4

ओ३म्। यस्मिन्नृचः साम यजूंᳫषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तᳫ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २४॥ —यजुर्वेद 34.5

ओ३म्। सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर् वाजिन ऽ इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ २५॥

—यजुर्वेद 34.6

ओ३म्। स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः॥ २६॥

—सामवेद उ० १.१.३

ओ३म्। अभयं न करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं

पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु॥ २७॥ —अथर्ववेद 19.15.5

ओ३म्। अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥ २८॥

—अथर्ववेद 19.15.6

भावार्थ— हे शान्ति के परम भण्डार प्रभो! आप अपनी असीम कृपा से समस्त दुःख, क्लेश और व्याधियों को दूर करके हमें परम शान्ति के स्रोत का अमृत रस पिलाओ। आपकी दया से पृथिवी पर शान्ति का सागर लहराता रहे। अन्तरिक्ष से शान्ति का अमृत बरसता रहे। द्युलोक से शान्ति के झरने झरते रहें। सूर्य, चन्द्रमा आदि नक्षत्र मण्डल शान्तिदायक हों। विद्युत्, अग्नि, वायु, जल, संवत्सर सदा शान्तिदायक रहें। दिन-रात्रियाँ, प्रभात की वेला शान्ति के गीत सुनायें। पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक की चेतन-अचेतन, प्रत्यक्ष-परोक्ष समस्त दिव्य शक्तियाँ शान्ति प्रदान करें।

हे दयालु! कल्याण मार्ग के पथिक बुद्धिमान्, विद्वान् जन हमें शान्ति का मार्ग दिखायें। शिल्पकला के आविष्कारक शान्तिदायक कलाओं का आविष्कार करें। कृषक अन्न आदि से शान्ति प्रदान करें। राजा और न्यायाधीश शान्तिदायक रहें। स्त्रियाँ गुणवती और शान्तिदायिका हों।

हे सर्वेश्वर! गौ, अश्व आदि पशु, ओषधियाँ, वनस्पतियाँ,

वन, पर्वत, नदियाँ, मेघ, समुद्र आदि शान्तिदायक हों। घर, धन, अन्न, यान, नौका आदि शान्तिदायक हों। हमारे यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्म, इन्द्रियाँ, वाणी शान्ति प्रदान करें।

हे आनन्द स्वरूप प्रभो! मेरा मन अत्यन्त वेगवान्, शक्तिशाली और अद्भुत है। यही मेरे कर्मों का, मेरे ज्ञान का, जीवन की शान्ति और मुक्ति का आधार है, परन्तु जब यह मन ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, लोभ, मोह, काम, क्रोध, अभिमान आदि नकारात्मक विचारों का शिकार हो जाता है, तब यही मेरी अशान्ति का एक मात्र कारण बन जाता है। आप कृपा करके मेरे मन को सत्य, प्रेम, अहिंसा, उदारता आदि सकारात्मक शुभ संकल्पों से ओत-प्रोत करके शान्त कर दीजिये।

हे अभय स्वरूप प्रभो! आप हमारे सब भय दूर कर दीजिये। हम शत्रु-मित्र तथा प्रत्यक्ष-परोक्ष स्थानों और सब दिशाओं में निर्भय होकर शान्ति का अनुभव करते हुए सौ वर्ष से भी अधिक सुदृढ़-स्वस्थ इन्द्रियों के साथ स्वाधीन होकर जीवित रहें और आपका गुण-गान करते रहें। यही हमारी कामना है, यही प्रार्थना है, यही याचना है। हे कृपानिधान! स्वीकार करो। स्वीकार करो। स्वीकार करो॥।

॥ इति शान्तिकरणम्॥

अग्न्याधान

यज्ञ कुण्ड में अग्नि स्थापित करने की विधि

अग्नि-ज्वालन मन्त्र

समिधा, कपूर अथवा रुई की घृत लगी बत्ती में से किसी एक को दीपक या दियासिलाई से निम्नलिखित मन्त्र बोलकर अग्नि प्रज्वलित करें।

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः॥

—गोभिल गृह्य सूत्र 1.1.11,शतपथ ब्रा. 3.2.1.6

अग्नि-स्थापन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके जलती हुई अग्नि को यज्ञ कुण्ड में समिधाओं के बीच में स्थापित करें।

ओ३म्। भूर् भुवः स्वुर् द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास् ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

—यजुर्वेद 3.5

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके वेदि में स्थापित अग्नि को घी, कपूर तथा पंखे से हवा करके प्रदीप्त करें—

ओ३म्। उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि

त्वमिष्टापूर्ते सꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥ —यजुर्वेद 15.54

समिधा आधान के मन्त्र

पहले से ही तैयार की हुई आठ-आठ अङ्गुल की तीनों समिधाओं को घी में डुबो लें।

पहली समिधा निम्नलिखित मन्त्र बोलकर यज्ञकुण्ड में जलती हुई अग्नि पर रखें।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ 1॥

—आश्वलायन गृह्य सूत्र 1.10.12

दूसरी समिधा निम्नलिखित दो मन्त्रों का उच्चारण करके यज्ञकुण्ड में रखें।

ओ३म्। समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर् बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥

ओ३म्। सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं

जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥
इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥ 2॥

—यजुर्वेद 3.1-2

तीसरी समिधा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके यज्ञकुण्ड में रखें।

ओ३म्। तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा॥
इदमग्नयेऽङ्गिरसे - इदन्न मम॥ ३॥

—यजुर्वेद 3.3

पञ्च घृताहुति-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का पांच बार उच्चारण करें और प्रत्येक बार घी की आहुति प्रदान करें।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस् तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥
इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम॥

—आश्वलायन गृह्य सूत्र 1.10.12

जल-सेचन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए दायीं अञ्जलि में जल लेकर यज्ञकुण्ड के चारों ओर निर्देशानुसार जल सेचन करें —

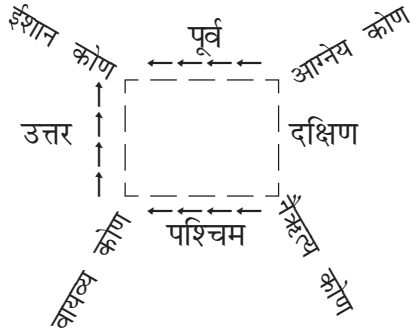

?

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व॥

—इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड की पूर्व दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥

—इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड की पश्चिम दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व॥

—इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड की उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर

(गोभिल गृह्य सूत्र प्र.1, ख. 3, सू.1-3। छान्दोग्य ब्राह्मण 1.1)

ओ३म्। देव॑ सवि॒तः प्रसु॑व य॒ज्ञं प्रसु॑व य॒ज्ञप॑तिं भगा॑य। दि॒व्यो ग॑न्ध॒र्वः के॒तपू॒ः

केतं नः पुनातु वाचस्पतिर् वाचं नः स्वदतु॥ —यजुर्वेद 30.1

इस मन्त्र से यज्ञ कुण्ड के पूर्व-दक्षिण अर्थात् आग्नेय कोण से प्रारम्भ करके दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम-उत्तर, उत्तर-पूर्व इस क्रम से प्रदक्षिणा की तरह चारों ओर जल सेचन करें और आग्नेय कोण पर जहां से प्रारम्भ किया था वहीं पहुंच कर विराम लें।

आघार-आज्याहुति मन्त्र

आघार = तरड़ाना—धारा रूप से। आज्य = घी अर्थात् यज्ञ में घी की धारा प्रवाह रूप से आहुति देना।

निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर में जलती हुई अग्नि पर घी की आहुति दें।

ओ३म्। अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये—इदं न मम॥

निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण में जलती हुई अग्नि पर घी की आहुति दें।

ओ३म्। सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय—इदं न मम॥ —गोभिल गृह्य सूत्र 1.8.24, यजुर्वेद 22.27

आज्यभागाहुति मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से घी की दो आहुतियाँ यज्ञकुण्ड के मध्य में प्रदान करें।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये—इदं न मम॥ —यजुर्वेद 22.32

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा॥ इदं इन्द्राय—इदं न मम॥ —यजुर्वेद 22.27

प्रातःकालीन आहुतियों के मन्त्र

प्रातःकाल अग्निहोत्र (देवयज्ञ) करते समय निम्नलिखित मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें। यदि दोनों समय का यज्ञ एक साथ किया जा रहा है तो प्रातःकालीन एवं सायंकालीन दोनों समय की आहुतियाँ एक साथ दें।

ओ३म्। सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ 1॥

ओ३म्। सूर्यो वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा॥ 2॥

ओ३म्। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ 3॥

ओ३म्। सजूर् देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥ 4॥

—यजुर्वेद 3.9-10

सायंकालीन आहुतियों के मन्त्र

सायंकाल अग्निहोत्र करते समय निम्नलिखित मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें। तृतीय मन्त्र प्रथम मन्त्र की ही आवृत्ति मात्र है। अतः इस मन्त्र से मौन रह कर आहुति प्रदान करें। सम्भवतः दोनों समय की आहुतियों की संख्या एक समान करने के लिए प्रथम मन्त्र का पुनः पाठ किया गया है।

ओ३म्। अ॒ग्निर् ज्योति॒र् ज्योति॑र॒ग्निः स्वाहा॑॥ 1॥

ओ३म्। अ॒ग्निर् वर्चो॒ ज्योति॒र् वर्च॑ः स्वाहा॑॥ 2॥

ओ३म्। अ॒ग्निर् ज्योति॒र् ज्योति॑र॒ग्निः स्वाहा॑॥ 3॥

ओ३म्। स॒जूर् दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॒जू रात्र्येन्द्र॑वत्या। जुषा॒णो ऽ अ॒ग्निर् वे॑तु स्वाहा॑॥ 4॥

—यजुर्वेद 3.9–10

प्रातः-सायं दोनों समय की आहुतियों के समान मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से दोनों समय घी और सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें। यदि यज्ञ एक ही समय करना

हो तो प्रात:कालीन एवं सायंकालीन आहुतियों के बाद इन मन्त्रें से आहुतियाँ प्रदान करें—

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा॥ इदमग्नये प्राणाय - इदन्न मम॥ 1॥

ओ३म् भुवर् वायवेऽ पानाय स्वाहा॥ इदं वायवेऽ पानाय - इदन्न मम॥ 2॥

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा॥ इदमादित्याय व्यानाय -इदन्न मम॥ 3॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः -इदन्न मम॥ 4॥

ओ३म्। आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर् भुवः स्वरों स्वाहा॥ 5॥ —तैत्तिरीय आरण्यक 10.27

ओ३म्। यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ 6॥ —यजुर्वेद 32.14

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा

सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा॥ 7॥

—यजुर्वेद 30.3

ओ३म्। अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम स्वाहा॥ 8॥

—यजुर्वेद 40.16

व्याहृति-आहुति-मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से घी की आहुतियाँ प्रदान करें।

ओ३म्। भूरग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये - इदन्न मम॥ 1॥

ओ३म्। भुवर् वायवे स्वाहा॥ इदं वायवे- इदन्न मम॥ 2॥

ओ३म्। स्वरादित्याय स्वाहा॥ इदमादित्याय -इदन्न मम॥ 3॥

ओ३म्। भूर् भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः -इदन्न मम॥ 4॥

—गोभिल गृह्य. 1.8.14

आज्याहुति—मन्त्राः (पवमान आहुतयः)

निम्नलिखित चार मन्त्रों से आज्य = **घी** की आहुतियाँ प्रदान करें:

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा॥ इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम॥ १॥

—ऋग्वेद 9.66.19

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। अग्निर् ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा॥ इदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम॥ २॥

—ऋग्वेद 9.66.20

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद् रयिं मयि पोषं स्वाहा॥ इंदमग्नये पवमानाय - इदन्न मम॥ ३॥

—ऋग्वेद 9.66.21

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास् ते जुहुमस् तन्नो ऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा॥ इदं प्रजापतये- इदन्न मम॥ ४॥

—ऋग्वेद 10.121.10

अष्ट-आज्य-आहुति-मन्त्राः

निम्नलिखित आठ मन्त्रों से आज्य = **घी** की आहुतियाँ प्रदान करें:

ओ३म्। त्वं नो ऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् -इदन्न मम॥ १॥

—ऋग्वेद 4.1.4

ओ३म्। स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽ अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् -इदन्न मम॥ २॥

—ऋग्वेद 4.1.5

ओ३म्। इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा॥ इदं वरुणाय-इदन्न मम॥ ३॥

—ऋग्वेद 1.225.19

ओ३म्। तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस् तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः

स्वाहा॥ इदं वरुणाय-इदन्न मम॥ ४॥

—ऋग्वेद 1.24.11

ओ३म्। ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽ अद्य सवितोत विष्णुर् विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः-इदन्न मम॥ ५॥

—कात्यायनश्रौतसूत्र 25.1.11

ओ३म्। अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित् त्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे-इदन्न मम॥ ६॥

—कात्यायनश्रौतसूत्र 25.1.12

ओ३म्। उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च - इदन्न मम॥ ७॥

—ऋग्वेद १.२४.१५

ओ३म्। भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा॥ इदं जातवेदोभ्याम् -इदन्न मम॥८॥

—यजुर्वेद ५.३

गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ

निम्नलिखित मन्त्र से घी तथा सामग्री की तीन आहुतियाँ प्रदान करें।

ओ३म्। भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ —ऋग्वेद 3. 62.10; यजुर्वेद 36.3

यदि अधिक होम करने की इच्छा हो तो *''स्वाहा'' शब्द अन्त में बोलकर ''गायत्री मन्त्र'' और ''विश्वानि देव...'' दोनों मन्त्रों से या किसी एक से यथेच्छा आहुतियाँ दें।*

स्विष्टकृत् - आहुति -मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करके घी अथवा भात=पानी में पकाये हुए नमक रहित चावल की एक आहुति प्रदान करें :

ओ३म्। यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद् वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये

स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान् नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते - इदन्न मम ॥

–आश्वलायन–गृह्यसूत्र १.१०.२२

प्राजापत्य-आहुति -मन्त्र

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण मन में करके **केवल घृत की आहुति** दें :

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये - इदन्न मम॥ ३ ॥ –यजुर्वेद २२.३२, पारस्कर गृ.सू. 1.11.3

पूर्णाहुति मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का तीन बार उच्चारण करें और हर बार घी और सामग्री की आहुति प्रदान करें।

ओ३म् । सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा।

—शतपथ ब्राह्मण 4.2.2.2, 5.2.2.1

बलिवैश्वदेव यज्ञ

पञ्च महायज्ञों में चौथा स्थान 'बलिवैश्वदेव यज्ञ' का है। यज्ञ करते समय स्विष्टकृत् आहुति से पहले खीर हलवा आदि मिष्ठान्न से निम्नलिखित दस आहुतियां प्रदान करें।

1. ओ३म् अग्नये स्वाहा॥

2. ओ३म् सोमाय स्वाहा॥

3. ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।

4. ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥

5. ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा॥

6. ओ३म् कुह्वै स्वाहा॥

7. ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा॥

8. ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥

9. ओ३म् सह द्यावा पृथिवीभ्यां स्वाहा॥

10. ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा॥

इसके बाद स्विष्टकृत् आहुति देकर अग्निहोत्र की सब विधि पूर्ण करें। तत्पश्चात् पशु, पक्षी, कीट, पतङ्ग एवं दीन-दुखियों के लिए खाद्य पदार्थों में से निकालकर उन्हें खिलाना चाहिए। भारत में आज भी भोजन से पहले गौ के लिए रोटी निकाली जाती है। यह बलिवैश्वदेव यज्ञ का ही रूपान्तर है। इसी प्रकार कुत्तों को, कौवों को एवं चीटियों आदि को अन्न देना भी इसी यज्ञ का भाग है।

अमावस्या की आहुतियाँ

यदि अमावस्या को अग्निहोत्र (देवयज्ञ) किया जाये तो अग्निहोत्र की स्विष्टकृत् आहुति से पहले निम्नलिखित आहुतियाँ, **स्थालीपाक** = अर्थात् भात की आहुतियाँ प्रदान करें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा॥

इदमग्नये—इदं न मम ॥1॥

ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा॥

इदमिन्द्राग्नीभ्याम्—इदं न मम ॥2॥

ओ३म् विष्णवे स्वाहा॥

इदं विष्णवे—इदं न मम ॥3॥

—गोभिल गृह्य सूत्र 1.8.21-23

निम्नलिखित व्याहृति मन्त्रों से घी की आहुतियाँ प्रदान करें-

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा॥

इदम् अग्नये-इदं न मम ॥4॥

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा॥

इदं वायवे-इदं न मम ॥5॥

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा॥

इदम् आदित्याय-इदं न मम ॥6॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा॥ इदम् अग्नि वाय्वादित्येभ्य-इदं न मम ॥7॥

पौर्णमासी की आहुतियाँ

पौर्णमासी को अमावस्या की विधि अनुसार निम्नलिखित आहुतियाँ प्रदान करें :

ओ३म् अग्नये स्वाहा॥

इदमग्नये—इदं न मम ॥1॥

ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा॥

इदम् अग्नीषोमाभ्याम्—इदं न मम ॥2॥

ओ३म् विष्णवे स्वाहा॥

इदम् विष्णवे—इदं न मम॥3॥

—गोभिल गृह्य सूत्र 1.8.21-23

निम्नलिखित व्याहृति मन्त्रों से घी की आहुतियाँ प्रदान करें-

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा॥

इदम् अग्नये-इदं न मम ॥4॥

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा॥

इदं वायवे-इदं न मम ॥5॥

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा॥

इदम् आदित्याय-इदं न मम ॥6॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा॥

इदम् अग्नि वाय्वादित्येभ्य-इदं न मम ॥7॥

पूर्णाहुति के बाद की प्रार्थना

अग्निहोत्र (देवयज्ञ) की पूर्णाहुति के बाद घृत-पात्र में शुद्ध जल डालकर यज्ञ की अग्नि पर हल्का सा तपायें। उस जल को दोनों हथेलियों पर मसल कर यज्ञाग्नि पर हाथ तपाकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए मुख, नेत्र, ललाट आदि अङ्गों पर मालिश करें।

ओ३म् । तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
ओ३म् । वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
ओ३म् । बलमसि बलं मयि धेहि।
ओ३म् । ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
ओ३म् । मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
ओ३म् । सहोऽसि सहो मयि धेहि॥

—यजुर्वेद 19.9

ओ३म् । असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय॥

—शतपथ ब्राह्मण 14.1.1.30

यज्ञ प्रार्थना

पूजनीय प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए॥1॥
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें॥2॥
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को॥3॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें॥4॥
भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की॥5॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये॥6॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो॥7॥
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप! करुणा आपकी सब पर रहे ॥8॥

(रचयिता—पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति)

संघटन सूक्त

ओ३म्। सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥1॥

हे प्रभो तुम शक्तिशाली, हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिए धन वृष्टि को॥

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥ 2॥

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम, कर्तव्य के मानी बनो॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि॥ 3॥

हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों॥

समानी व आकूतीः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥ 4॥

हों सभी के दिल तथा, संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरें हों प्रेम से, जिससे बढ़ें सुख सम्पदा॥

—ऋग्वेद 10.191.1-4

विश्व कल्याण की प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दुःखहारी।
सब हों निरोग भगवन्, धन धान्य के भण्डारी ॥1॥
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी ॥2॥

शान्ति पाठ

अग्निहोत्र आदि यज्ञों की सम्पूर्ण विधिा के बाद सबसे अन्त में निम्नलिखित मन्त्र से शान्ति पाठ करें—

ओ३म्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शान्ति-गीत

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिए .....
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में,सकल विश्व में जड़-चेतन में॥
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य-जनों के होवे धन में, और शूद्र के हो चरणन में॥
शान्ति राष्ट्र-निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में।
जीवमात्र के तन में मन में, और जगति के हो कण-कण में॥

स्वास्थ्य कामना के लिए आहुतियाँ

यदि शरीर में किसी प्रकार का रोग उत्पन्न हो गया है तो उसे प्रयत्नपूर्वक दूर करें। अग्निहोत्र की स्विष्टकृत् आहुति से पहले निम्नलिखित मन्त्रों से आहुतियाँ प्रदान करें। सामग्री में रोग निवारक पदार्थ मिलाये जायें।

ओ३म्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्

स्वाहा॥ —ऋग्वेद 7.59.12

भावार्थ — हे सबके रक्षक प्रभो! आप सर्वज्ञ हो, इसी कारण भूत, भविष्यत् और वर्तमान को भली-भांति जानते हो। आप ही सुगन्धि और पुष्टि को बढ़ाने वाले हो। हे प्रभो! जैसे पका हुआ फल स्वयं डण्ठल से छूट जाता है, उसी प्रकार आप हमें मृत्यु से छुड़ाकर अमृत रूपी मोक्ष प्रदान करो।

ओं तनूपा ऽ अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि। आयुर्दा ऽ अग्नेऽस्यायुर् मे देहि। वर्चोदाऽ अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्मऽआपृण स्वाहा॥ —यजुर्वेद 3.17

भावार्थ — हे सबके रक्षक, परमेश्वर! तुम शरीर की रक्षा करने वाले हो, मेरे शरीर की रक्षा करो। हे सबके रक्षक परमेश्वर! तुम आयु को देने वाले हो, मुझे दीर्घायु प्रदान करो। हे सबके रक्षक परमेश्वर! तुम तेज को देने वाले हो मुझे तेजस्वी बनाओ। हे ज्ञान स्वरूप प्रभो! मेरे शरीर में जो-जो न्यूनतायें हैं उनको दूर करके मेरे शरीर को पूर्ण रूप से स्वस्थ बनाओ।

ओ३म्। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस् तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः स्वाहा॥ —यजुर्वेद 25.21

भावार्थ — हे सबके रक्षक परमेश्वर! हम कानों से सदा उत्तम मधुर वचनों को सुनते रहें। आँखों से सदा कल्याण देखते रहें। हमारे शरीर के सभी अङ्ग सदा स्वस्थ और सुदृढ़ हों और हम पूर्ण आयु को प्राप्त करें।

इसके बाद गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ तथा स्विष्टकृत् आहुति प्रदान करके अग्निहोत्र की सब विधि पूर्ण करें।

जन्म दिवस की विधि

परिवार के किसी सदस्य के जन्म दिवस के अवसर पर अग्निहोत्र (देवयज्ञ) करते समय स्विष्टकृत् आहुति से पहले निम्नलिखित मन्त्रों से आहुतियाँ प्रदान करें तथा मन्त्रों के अर्थ का चिन्तन करें।

ओ३म्। इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्। सर्वमायुर्जीव्यासं स्वाहा॥

—अथर्ववेद 19.70.1

भावार्थ — हे ऐश्वर्यशाली सर्वव्यापक ईश्वर! मेरा जीवन दीर्घ हो और मैं दिव्य शक्ति से युक्त होकर पूर्ण आयु प्राप्त करूँ।

ओ३म्। तच्चक्षुर् देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् स्वाहा॥

—यजुर्वेद 36.24

भावार्थ — हे ईश्वर! आप सबको देखने वाले तथा सबको मार्ग दिखाने वाले हो। आप ही विद्वानों और उपासकों के हितैषी हो। आप सृष्टि के पूर्व से लेकर सदा विद्यमान रहते हो। आपके शुद्ध स्वरूप को हम सौ वर्षों तक देखते रहें। सौ वर्षों तक आपका ध्यान करते हुए जीवित रहें। सौ वर्षों तक आपके गुण सुनते रहें। सौ वर्षों तक आपके गुणों का प्रवचन करते रहें। सौ वर्षों तक दीनता रहित स्वाधीन होकर जीवित रहें तथा सौ वर्षों के बाद भी हम आपको देखते हुए आपका ध्यान करते हुए, आपके गुणों को सुनते हुए, आपका गुणगान करते हुए, स्वाधीन होकर जीवित रहें।

ओ३म्। सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूष सं बृहस्पतिः। सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे स्वाहा॥

—अथर्ववेद 7.33.1

भावार्थ — हे सबके रक्षक परमेश्वर! आपकी कृपा से प्राण देने वाली वायु, भरण-पोषण करने वाली भूमि, प्रकाश देने वाली अग्नि, महान् आकाश और जल-ये पाँचों तत्त्व मेरे शरीर को पुष्ट करें। मैं पुत्र-पौत्रों से और धन-ऐश्वर्य से युक्त होकर दीर्घ आयु प्राप्त करूँ।

ओ३म्। सुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूयासं सुवर्चा मुखेन। सुश्रुतः कर्णाभ्यां भूयासं स्वाहा॥

—पारस्कर गृह्य सू.2.6.19

भावार्थ — हे परमेश्वर! आपकी कृपा से मैं स्वस्थ,

सुन्दर और तेजस्वी बना रहूँ। मेरी आँखें स्वस्थ और सुन्दर बनी रहें और कान सदा सुन्दर वचन सुनते रहें।

इसके बाद गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ तथा स्विष्टकृत् आहुति देकर अग्निहोत्र की सब विधि पूर्ण करें।

विवाह-दिवस विधि

जिस दिन विवाह की वर्षगांठ हो, उस दिन पति-पत्नी मिलकर आत्म निरीक्षण करें। अपनी उन्नति, प्रेम, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति आदि का चिन्तन करके आगे की योजना बनायें। उन समस्त कारणों को दूर करने का संकल्प करें, जिनसे विवाद होता है। इस प्रकार गृहस्थ जीवन को आनन्दमय बनाकर सुखी रहें।

इस दिन स्नानादि के बाद श्रद्धापूर्वक अग्निहोत्र स्विष्टकृत् आहुति से पहले तक करके, निम्नलिखित आहुतियाँ प्रदान करें—

ओ३म्। सम॑ञ्जन्तु॒ विश्वे॑ दे॒वाः समापो॒ हृद॑यानि नौ। सं मा॑त॒रिश्वा॒ सं धा॒ता समु॑ दे॒ष्ट्री॑ दधातु नौ स्वाहा॥ —ऋग्वेद 10.85.47

भावार्थ — इस यज्ञ में उपस्थित सभी विद्वानों! आपके सामने हम विश्वासपूर्वक घोषणा कर रहे हैं कि हम दोनों के हृदय इस प्रकार मिले हुए हैं जैसे जल से जल मिल जाता है। ईश्वर की कृपा से हम आगे भी इसी प्रकार एक-दूसरे से प्रेम करते रहें। विश्व की समस्त दिव्य शक्तियाँ हमें प्रेम के मार्ग पर चलाती रहें।

ओ३म्। गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः। भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः स्वाहा॥ —ऋग्वेद 10.85.36

भावार्थ — हम दोनों ने एक-दूसरे का हाथ सम्पूर्ण ऐश्वर्य को प्राप्त करते हुए जीवन पर्यन्त साथ रहने के लिए ग्रहण किया है। सकल संसार को उत्पन्न करके धारण करने वाले ईश्वर और आप सबके सामने एक बार फिर निश्चयपूर्वक कह रहे हैं कि हम सम्पूर्ण जीवन इस गृहस्थ आश्रम में साथ रहेंगे।

ओ३म्। मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यं स्वाहा॥

—पारस्कर गृह्य सूत्र 1.8.8

भावार्थ — हम दोनों का अन्तःकरण परस्पर अनुकूल बना रहे। हमारा विचार एक सा हो। हम एक-दूसरे की बात को ध्यान से सुनें। हे ईश्वर! इस प्रकार हम एक-दूसरे के सहायक बने रहें।

ओ३म्। सह नाववतु सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै स्वाहा॥ —तैत्तिरीय- उपनिषद् ब्रह्मानन्दवल्ली

भावार्थ — हे परमेश्वर! हम दोनों पति-पत्नी का भरण-पोषण और पालन साथ-साथ करो। हम दोनों साथ-साथ

ही बल और उत्साह को प्राप्त करें। हम दोनों का चिन्तन, तेजस्वी और सफल होवे और हम कभी भी एक-दूसरे से द्वेष न करें।

ओ३म्। इ॒हैव स्तं मा वि यौ॑ष्टं विश्व॒मायु॒र्व्यश्नुतम्।
क्रीड॑न्तौ पु॒त्रैर्न॒प्तृभि॒र्मोद॑मानौ स्वस्त॒कौ स्वाहा॥

—ऋग्वेद 10.85.42

भावार्थ — हे दम्पती यजमान! तुम दोनों सदा साथ रहते हुए पूर्ण आयु प्राप्त करो। तुम्हें कभी भी वियोग न सहना पड़े। पुत्र, पौत्र व नातियों के साथ अपने घर में सदा आनन्द मनाते रहो।

इसके बाद गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ व स्विष्टकृत् आहुति देकर अग्निहोत्र की सब क्रिया पूर्ण करें।

॥ इति बृहद् अग्निहोत्र विधिः॥

ईश्वर भक्ति के भजन

– 1 –

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता–विधाता, ओ३म् पालनहार है॥ 1॥
ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल–तेजधारी, ओ३म् करुणाकन्द है॥ 2॥
ओ३म् सबका पूज्य है हम, ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के जाप से हम, शुद्ध अपना मन करें॥ 3॥
ओ३म् का गुरु–मन्त्र जपने – से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन–प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन॥ 4॥
ओ३म् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओ३म् हमको, मोक्ष तक पहुँचाएगा॥ 5॥

– 2 –

तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊं मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं॥
जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाए हैं।
क्या जानूं इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाए हैं।
हूँ शर्मिन्दा आपसे, क्या बतलाऊं मैं॥ तेरे दर....॥ 1॥
मेरे पाप कर्म ही तुझसे प्रीत न करने देते हैं।
कभी जो चाहूँ मिलूं आपसे रोक मुझे ये लेते हैं।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊं मैं॥ तेरे दर....॥ 2॥
है तू नाथ! वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं।
ऋषि, मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं।
छींटा दे दो ज्ञान का होश में आऊं मैं॥ तेरे दर....॥ 3॥
जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर सम्भालूं मैं।
प्रेमपाश में बंधा आपके गीत प्रेम के गा लूं मैं।
जीवन प्यारे **'देश'** का सफल बनाऊं मैं॥ तेरे दर....॥ 4 ॥

– 3 –

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में॥
मेरा निश्चय है एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूँ जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥ 1॥
या तो मैं जग से दूर रहूँ, या जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में॥ 2॥
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं।
हों मुझ पूजक की पूजा के सब, तार तुम्हारे हाथों में॥ 3॥
जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार तेरे में आऊं मैं।
हो मेरे कर्मों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में॥ 4॥
मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥ 5॥

– 4 –

भगवान् मेरी नैया

भगवान् मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥
दल-बल के साथ माया, घेरे जो मुझको आकर।
तो देखते न रहना, झट आके बचा लेना॥ 1॥
सम्भव है झंझटों में, मैं तुम को भूल जाऊं।
पर नाथ! कहीं तुम भी, मुझ को न भुला देना॥ 2॥
तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है तो फिर, सच करके दिखा देना॥ 3॥

– 5 –

मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ 1॥
चाहे वैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझपर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ 2॥
चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ 3॥
मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ 4॥
चाहे काँटो पे मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के 'देश' निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ 5॥

–6–

तू है सच्चा पिता

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का ओ३म् प्यारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा॥ 1॥
चाँद-सूरज-सितारे बनाए, पृथिवी-आकाश-पर्वत सजाए।
अन्त आया नहीं, भेद पाया नहीं पारवारा॥ तू ही ०॥ 2॥
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव-जन्तु सभी सिर झुकाते।
उसको ही सुख मिला,तेरी राह पर चला,जो भी प्यारा॥ तू ही ०॥ 3॥
पाप-पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेद-मार्ग पर हमको चलाओ।
लगे भक्ति में मन, करे सन्ध्या-हवन जग यह सारा॥ तू ही ०॥ 4॥
अपनी भक्ति में मन को लगाना, कष्ट 'नन्दलाल' सबके मिटाना।
दुखियों कंगालों का, और धनवालों का, तू सहारा॥ तू ही ०॥ 5॥

– 7 –

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया, तो मन में मैल जरा न रहा॥

परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आँखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके, कोई उससे भेद छिपा न रहा॥

पुरुषारथ ही इस दुनिया में, सब कामना पूरी करता है।
मन चाहा फल उसने पाया, जो आलसी बन के पड़ा न रहा॥

दुःखदायी हैं, सब शत्रु हैं, ये विषय हैं, जितने दुनिया के।
वही पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फँसा न रहा॥

यहाँ वेद-विरुद्ध जब मत फैले, पत्थर की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई, फिर ज्ञान का पाँव जमा न रहा॥

यहाँ बड़े-बड़े महाराज हुए, बलवान् हुए विद्वान् हुए।
पर मौत के पंजे से 'केवल', कोई दुनिया में आके बचा न रहा॥

–8–

वह शक्ति हमें दो दयानिधे!

वह शक्ति हमें दो दयानिधे! कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जावें॥
हम दीन दुखी निबलों विकलों, के सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारें खुद तर जावें॥
छल-दम्भ द्वेष पाखण्ड झूठ, अन्याय से निशदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधाा रस बरसावें॥
निज आन बान, मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें॥

–9–

वेला अमृत गया आलसी सो रहा

वेला अमृत गया, आलसी सो रहा, बन अभागा।
साथी सारे जगे तू न जागा॥
झोलियाँ भर रहे भाग्यवाले, लाखों पतितों ने जीवन सम्भाले।
रंक राजा बने, भक्ति रस में सने, कष्ट भागा॥ साथी....
कर्म उत्तम थे नर–तन जो पाया, आलसी बन के हीरा गंवाया।
उलटी हो गई मति, करके अपनी क्षति, रोने लागा। साथी....
धर्म वेदों का तूने न पाला, वेला अमृत गया न सम्भाला।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पे धर, रोने लागा॥ साथी....
'देश' अब भी न तूने विचारा, सिर से ऋषियों का ऋण न उतारा।
हंस का रूप था, गदला पानी पिया, बनके कागा॥ साथी....

–10–

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है॥
टुक नींद से अखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है॥
जो कल करना सो आज कर ले, जो आज करना सो अब कर ले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है॥
नादान भुगत करनी अपनी, ओ पापी! पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस धारी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है॥

–11–

जब नाथ का नाम दयानिधि है

जब नाथ का नाम दयानिधि है, तो दया भी करेंगे कभी न कभी।
जब तारणहार कहावत है, भव पार करेंगे कभी न कभी॥ 1॥
हम पापों के करने वाले हैं, प्रभु पापों के हरने वाले हैं।
जब पाप अधिक बढ़ जाएँगे, प्रभु नाश करेंगे कभी न कभी॥ 2॥
प्रभु दु:ख–विनाशक सुखदाता, सब संकट हरने वाले हैं।
जब देव दयालु कृपानिधि हैं, तो कृपा भी करेंगे कभी न कभी॥ 3॥

–12–

आशीर्वाद गीत

इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक आयुष्मान् हो।
तेजस्वी–वर्चस्वी–निर्भय, सर्वोत्तम विद्वान् हो॥

बने सुमन–सा कोमल सुन्दर, दानी बनकर दान करे।
दुष्टों से न डरे कभी यह, श्रेष्ठों का सम्मान करे।
मानव–धर्म समझकर चलने – वाला चतुर सुजान बने।
इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक..... ॥ 1॥

चारों ओर विजय हो इसकी, पाए सुख–सम्मान भी।
सौ वर्षों से अधिक आयु हो, करे धर्महित दान भी।
नेता बने देश का अपने, जगभर में सम्मान हो।
इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक..... ॥ 2॥

बनकर परम भक्त ईश्वर का, अपना यश फैलाए यह।
मात–पिता की सेवा करके, पितृ–भक्त कहलाए यह।
अपना नाम अमर कर जग में, सर्वगुणों की खान हो।
इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक..... ॥ 3॥

युगपुरुष दयानन्द

हे युगद्रष्टा ! हे युगस्रष्टा !
नवयुग नायक, युग-ऋषि महान् !
जन-जन-मानस के मान्य मुनि,
युग के युग-युग तक हों प्रणाम !

हे ब्रह्मचर्य प्रतिमा अनुपम, हे वेदपुरुष वैदिक प्रमाण !
तुम थे वेदों से प्राणवान् या वेद तुम्हीं से? हूँ अजान॥
हे वेदसिद्ध, हे कर्मनिष्ठ, हे लौहपुरुष कोमल उदार !
तुम द्रवित हृदय धर्मावतार, पीड़ित शोषित जन की पुकार॥

तेरे सद्भावों के रवि से, ज्यों ओस लुप्त त्यों एक साथ।
क्या ऊँच-नीच क्या छूत-छात, सब भेदभाव सब जात-पात॥
जिस ओर तुम्हारे बढ़े कदम, समरसता की फूटी बयार।
कट गए अविद्या बन्ध विकट, पाखण्ड कुरीति अन्ध जाल॥

शिक्षा - समानता - स्वाभिमान, पाकर नारी लहलहा उठी।
मानवता में कोंपल फूटी, सामाजिकता मुस्करा उठी॥
तुम मूक प्राणियों की वाणी, विधवा की आँखों के चिराग।
तुम थे स्वराज्य प्रथमोद्घोष, स्वातन्त्र्य-समर के रौद्र-राग॥

वैदिक संस्कृति के विमल मन्त्र, नव-राष्ट्र-चेतना-उषःराग।
सत्यार्थ-प्रकाशक सत्यनिष्ठ, एकेश उपासक वीतराग॥
हे भस्मकाम पूर्णाप्तकाम, तुम चिर-नवीन तुम चिर-पुराण।
आचरणसिद्ध आचार्यवृद्ध, तुम दिव्य कर्म तुम दिव्य ज्ञान॥

हे शान्तिशील! हे क्रान्तिदूत!
गंगा की पावन विमल धार।
आनन्दकन्द यति दयानन्द,
नत-नयन-कोटिजन नमस्कार॥

- डॉ. नरेश कुमार धीमान

–13–

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलां शस्य–श्यामलां मातरम्॥
वन्दे मातरम्
शुभ्र–ज्योत्स्नां पुलकित–यामिनीं
फुल्ल–कुसुमित–द्रुमदल–शोभिनीम्,
सुहासिनीं–सुमधुर–भाषिणीं सुखदां वरदां मातरम्॥
वन्दे मातरम्

–14–

भारतीय राष्ट्र गान

जन–गण–मन अधिनायक जय हे,
भारत–भाग्य विधाता।
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल–जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन–गण मंगलदायक जय हे,
भारत–भाग्य विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय जय हे।

–15–

वैदिक राष्ट्रिय गीत

अपने राष्ट्र की सुख-समृद्धि और सर्वाङ्गीण विकास के लिए परमेश्वर से निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिए।

ओ३म्। आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्युः शूर इषव्यो ऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर् वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर् योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा॥ ४॥ —यजुर्वेद 22.22

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल-विनाशकारी॥
होवें दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार बरसें, पर्जन्य ताप धोवें॥
फल फूल से लदी हों, ओषध अमोघ सारी।
हों योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी॥

यजमान को आशीर्वाद

यजमान परिवार सहित हाथ जोड़कर प्रभु से कल्याण की कामना करता हुआ बैठा रहे, अन्य सभी उपस्थित महानुभाव फूल अथवा चावल हाथ में लेकर खड़े हो जायें और निम्नलिखित मन्त्र से यजमान परिवार की समृद्धि की कामना करते हुए आशीर्वाद दें:—

ओ३म्। उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान्यज्ञेन बोधय। आयुः प्राणं प्रजां पशूं कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥

—अथर्ववेद 19.63.1

भावार्थ — हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर! आप यज्ञ द्वारा विद्वानों में देव भावों को जगाओ और श्रेष्ठ कर्म यज्ञ का आयोजन करने वाले यजमान को आयु, प्राण, सन्तान, पशु, यश आदि सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करके सब प्रकार से बढ़ाओ।

ओ३म्। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस् तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु॥

—यजुर्वेद 25.19

भावार्थ— ऐश्वर्यसम्पन्न, महान् यशवाला, सबका भरण पोषण करने वाला, ज्ञान का भण्डार, संसार सागर से पार उतारने वाला, सुदृढ़ आधारवाला, महान् लोकों का रक्षक,

ईश्वर हमारा कल्याण करे।

निम्नलिखित प्रार्थना करने के बाद यजमान पर फूलों या चावलों की वर्षा करें।

ओ३म् सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् शुभाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् शिवाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् सफला भवन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् सौभाग्यमस्तु। ओ३म् शुभं भवतु।
ओ३म् स्वस्ति। ओ३म् स्वस्ति। ओ३म् स्वस्ति।

जन्म-दिवस पर बालक/ बालिका को आशीर्वाद

हे (बालक.....!) त्वम् जीव शरदः शतं वर्धमानः।
त्वम् आयुष्मान्, वर्चस्वी, तेजस्वी, श्रीमान्, धीमान्,
विद्वान् च भूयाः॥

(हे बालक! तुम सौ वर्षों तक जीवो,बढ़ो, फलो-फूलो। तुम आयुष्मान्, वर्चस्वी, तेजस्वी, श्रीमान्, बुद्धिमान् और विद्वान् बनो।)

हे (बालिके.....!) त्वम् जीव शरदः शतं वर्धमाना।
त्वम् आयुष्मती, वर्चस्विनी, तेजस्विनी, श्रीमती, धीमती,
विदुषी च भूयाः॥

(हे बालिका! तुम सौ वर्षों तक जीवो, बढ़ो, फलो-फूलो। तुम आयुष्मती, वर्चस्विनी, तेजस्विनी, श्रीमती, बुद्धिमती और विदुषी बनो।)

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे,
स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे ॥ 1॥ ओ३म् जय ..
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का,
स्वामी दुःख विनसे मन का।
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ 2॥
ओ३म् जय जगदीश हरे ...
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी,
स्वामी शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥ 3॥
ओ३म् जय जगदीश हरे ...
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी,
स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥ 4॥
ओ३म् जय जगदीश हरे ...
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता,
स्वामी तुम पालनकर्त्ता।
मैं मूर्ख फल कामी, मैं सेवक तुम स्वामी,
कृपा करो भर्त्ता ॥ 5॥ ओ३म् जय...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,
स्वामी सबके प्राणपति।
किस विध मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ 6॥
ओ३म् जय जगदीश हरे ...
दीनबंधु दुःख हर्त्ता, रक्षक तुम मेरे,
स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, अपनी शरण लगाओ,
द्वार पड़ा तेरे ॥ 7॥ ओ३म् जय...
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,
स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ 8॥
ओ३म् जय जगदीश हरे ...

जयघोष

शान्ति पाठ के बाद निम्नलिखित प्रकार से जयघोष करें। इससे संघटन का विचार शक्तिशाली होता है और उत्साह का संचार होता है।

जो बोले सो अभय —वैदिक धर्म की जय
भारत माता की —जय
गौ माता की —जय
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की—जय
योगिराज श्रीकृष्ण की —जय
ब्रह्मर्षि विरजानन्द की —जय
महर्षि दयानन्द की —जय
आर्य समाज —अमर रहे
वेद की ज्योति —जलती रहे
ओ३म् का झण्डा —ऊँचा रहे
वैदिक ध्वनि —ओ३म्

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

2. ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधर, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है। असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

6. संसार का उपकार करना-इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7. सबसे प्रीति-पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।